• वर्ष ६५ • अंक १० • मूल्य ₹२०

मई (द्वितीय) २०२३

पाक्षिक

परोपकारी

महर्षि दयानन्द सरस्वती

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित
वैदिक पुस्तकालय द्वारा प्रकाशित पुस्तकें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुखपत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

वर्ष : ६५ अंक : १०

दयानन्दाब्द: १९९

विक्रम संवत् - ज्येष्ठ कृष्ण २०८०

कलि संवत् - ५१२४

सृष्टि संवत् - १,९६,०८,५३,१२४

▪

सम्पादक

डॉ. वेदपाल

▪

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४
०८८९०३१६९६१

▪

मुद्रक-देवमुनि-भूदेव उपाध्याय
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

▪

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-४०० रु.

पाँच वर्ष-१५०० रु.

आजीवन (२० वर्ष) -६००० रु.

एक प्रति - २०/- रु.

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
०७८७८३०३३८२

ऋषि उद्यान : ०१४५-२९४८६९८

RNI. No. ३९५९ / ५९

परोपकारी

मई-द्वितीय, २०२३

अनुक्रम

०१. आर्यसमाज : लक्ष्य-उपलब्धि...	सम्पादकीय	०४
०२. कुछ उद्‌गार - विचार	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	०७
०३. भारतीय राजनीति के सुखद संकेत	आ. रामनिवास गुणग्राहक	१०
०४. अग्नि सूक्त-४४	डॉ. धर्मवीर	१३
०५. संस्था समाचार	श्री ज्ञानचन्द	१६
०६. सार्वभौम सिद्धान्त वेद के...	डॉ. रामवीर	१८
०७. वैदिक मनोविज्ञान : मनोविज्ञान का...	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी	१९
* परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम		२६
०८. शहीदों की कुर्बानी याद करो	पं. नन्दलाल निर्भय	२७
* योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर		२८
* परोपकारिणी सभा द्वारा प्रकाशित पुस्तकों पर विशेष छूट		३०
०९. संस्था की ओर से....		३२
* 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

आर्यसमाज : लक्ष्य-उपलब्धि-प्रासंगिकता एवं चुनौती

गताङ्क मई-प्रथम से आगे

लक्ष्य- महर्षि दयानन्द आर्यसमाज की स्थापना (अप्रैल सन् १८७५ ई.) से पूर्व ही सक्रिय रूप से प्रचार में संलग्न थे। हरिद्वार कुम्भ (सन् १८६७ ई.) में पाखण्डखण्डिनी पताका फहराकर हिन्दू समाज में व्याप्त अन्धविश्वास एवं पाखण्ड-खण्डन का तुमुल घोष कर चुके थे। काशी शास्त्रार्थ (१६ नवम्बर सन् १८६९ ई.) में मूर्तिपूजा का खण्डन तथा उसे वेद विरुद्ध बताने के साथ ही महर्षि के भावी कार्यक्षेत्र के लक्ष्य स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं।

वेद की निर्भ्रान्तता तथा वेदप्रतिपादित ईश्वर के स्वरूप का यथार्थ प्रतिपादन महर्षि के अभिमत लक्ष्य में प्रथम स्थानी हैं। जितने भी देव हिन्दू समाज में ईश्वर के स्थानापन्न होकर प्रतिष्ठित हो चुके थे, उन सबको वेद की कसौटी पर कसकर उनकी यथार्थता/निस्सारता का प्रतिपादन महर्षि के अग्रिम कार्यकाल में सर्वोपरि रहा है।

आर्यसमाज की स्थापना के समय नियम (उद्देश्य) निर्धारण करते समय तृतीय नियम में- 'वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है' कहना तथा प्रथम नियम में- सब सत्यविद्याओं का आदि मूल परमेश्वर ("सब सत्यविद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।") को मानना-वेद की निर्भ्रान्तता का पुनः उद्घोष है। ब्रह्मसमाज तथा थियोसोफिकल सोसायटी के आग्रह पर भी महर्षि इस बिन्दु/लक्ष्य से किञ्चित् भी समझौता नहीं कर सके थे।

मूर्तिपूजा (ईश्वर को साकार मानकर किसी विग्रहविशेष को ईश्वर स्थानी मानकर उसकी पूजा-उपासना करना।) का खण्डन अथवा निषेध करने का अभिप्राय ही है कि मूर्ति=विग्रहविशेष ईश्वर अथवा उसकी स्थानापन्न नहीं है। अतः इस निषेध के साथ ही ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का प्रतिपादन अपरिहार्य हो जाता है। ईश्वर के स्वरूप का प्रतिपादन तभी पूर्ण होता है, जब उसके स्वरूप प्रतिपादन के साथ उसके गुण, कर्म और स्वभाव का भी स्पष्ट निरूपण किया जाए। यहाँ यह अवश्य ही ध्यान रखने योग्य है कि महर्षि का मूर्तिपूजा खण्डन अन्य मतावलम्बियों द्वारा किए गए अथवा किए जाने वाले मूर्ति खण्डन से पूर्णतः विपरीत है। जहाँ अन्य मतावलम्बी मूर्तियों को तोड़ने की बात करते हैं, वही महर्षि स्पष्ट प्रतिपादित करते हैं कि ये ईश्वर या उसके स्थानी नहीं है। अतः इनकी पूजा या उपासना ईश्वर की उपासना नहीं है।

लक्ष्य निर्धारण करते समय केवल संकेत मात्र करना पर्याप्त नहीं है, अपितु लक्ष्य का बोध इतनी स्पष्टता के साथ होना कि किसी भी प्रकार का सन्देह न रहे, तभी लक्ष्य प्राप्ति सम्भव है। महर्षि ने ईश्वर के वास्तविक स्वरूप को तटस्थ और स्वरूप लक्षण दोनों के द्वारा हस्तामलकवत् स्पष्ट कर दिया है। प्रथम नियम में ईश्वर को सब सत्य विद्या तथा विद्या से ज्ञेय पदार्थों का आदिमूल कहा है। दूसरे नियम में स्वरूप लक्षण करते हुए सच्चिदानन्द=सत्+चित्+आनन्द स्वरूप, निराकार आदि पदों से स्पष्ट कर दिया है। इस नियम में उसके स्वरूप के साथ-साथ सर्वशक्तिमत्त्व, न्यायकारित्व आदि गुणों के साथ उसके सृष्टिकर्त्ता होने का भी प्रतिपादन किया है। यहाँ नियम की व्याख्या अभिप्रेत नहीं है, अपितु ईश्वर के सम्बन्ध में महर्षि एवं आर्यसमाज का दृष्टिकोण मात्र स्पष्ट करना है।

वेद के सम्बन्ध में भी महर्षि का दृष्टिकोण पूर्ववर्ती आचार्यों (स्कन्द स्वामी, वेंकटमाधव, उवट, सायण आदि

वेदभाष्यकारों) से पूर्णत: भिन्न है। महर्षि ऋक्, यजु, साम, अथर्व इस संहिता चतुष्टय की ही वेद संज्ञा स्वीकार करते है। इनसे भिन्न ऐतरेय, शतपथ आदि ब्राह्मण ग्रन्थों का परत: प्रमाणत्व मानते हुए भी उन्हें 'वेद' पद ग्राह्य नहीं मानते हैं। आर्यसमाज के तीसरे नियम में पूर्ण स्पष्टता के साथ इसे प्रतिपादित किया गया है- ''वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।'' इस नियम में यदि महर्षि 'सब' इस पद को छोड़ देते, तब थियोसोफिकल सोसायटी के साथ सम्बन्ध बने रहना सम्भव था, किन्तु महर्षि वेद की निर्भ्रान्तता के प्रति इतने आश्वस्त थे कि वह कोई समझौता या मध्यमार्ग स्वीकार नहीं कर सकते थे। महर्षि की ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तथा वेदभाष्य ने इसे पुष्ट किया है। योगी अरविन्द ने महर्षि के वेद विषयक दृष्टिकोण की अभिशंसा की है।

मानव के समग्र विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य है। अत: महर्षि ने शिक्षा का आदर्श स्वरूप प्रतिपादित करते हुए बिना किसी भेदभाव के मनुष्य मात्र को शिक्षा प्राप्ति के समान अवसर दिए जाने पर बल दिया है। राजकुमार तथा दरिद्र के सन्तान को समान शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराया जाना महर्षि की दृष्टि में अपरिहार्य है। इसमें स्त्री-पुरुष के भेद को भी अवकाश नहीं है। जबकि महर्षि के समय स्त्रीवर्ग के साथ ही समाज के बड़े वर्ग के लिए भी समान अवसर सुलभ नहीं थे। महर्षि का लक्ष्य आर्ष प्रणाली की शिक्षा का प्रसार करना था।

उन्नीसवीं सदी में स्त्रियों की दशा शोचनीय थी। बाल विवाह की कुप्रथा थी। विधवा (बालविधवा होने पर भी) को यावज्जीवन वैधव्य का जीवन व्यतीत करने को बाध्य किया जाता था। नारी अस्मिता की रक्षा में यह महत्त्वपूर्ण बाधा थी। वेदादि शास्त्रों के अध्ययन से वंचित रखना तथा जहाँ-तहाँ सती प्रथा सदृश कुरीतियाँ हिन्दू समाज में जड़ जमा चुकी थीं। समकालीन समाज सुधारक तक इन कुरीतियों का वाचिक विरोध करते हुए भी इनके विरुद्ध न तो कोई आन्दोलन खड़ा कर पा रहे थे और न ही ऐसी विषम परिस्थिति स्वगृह या परिवार में होने पर कथनी और करनी में सामञ्जस्य ही प्रदर्शित कर पा रहे थे। अपितु कथनी से विरोध कर व्यवहार में इन कुरीतियों का समर्थन करने में भी संकोच नहीं था।

पुनर्जागरण की जन्मभूमि बंगाल में ईश्वरचन्द्र विद्यासागर तथा देवेन्द्रनाथ ठाकुर (रवीन्द्रनाथ टैगोर के पिता) विधवा विवाह के समर्थक थे, किन्तु बंगाल में विधवा/बाल विधवा की स्थिति इतनी दयनीय थी कि बंगाल की अधिकांश बाल विधवाएँ शेषजीवन मथुरा-वृन्दावन में व्यतीत करती थीं। देवेन्द्रनाथ ठाकुर के पौत्र बलेन्द्रनाथ की मृत्यु होने पर बलेन्द्रनाथ की पत्नी वैधव्य जीवन व्यतीत करने के लिए मथुरा चली गई। उनके पितृ पक्ष के परिवारीजन उसका पुनर्विवाह करना चाह रहे थे। देवेन्द्रनाथ ठाकुर को जब यह बात पता चली, तो उन्होंने अपने पुत्रों द्विजेन्द्रनाथ तथा ज्योतीन्द्रनाथ से उसे पुन: कलकत्ता लाने का आदेश दिया। इन दोनों पुत्रों ने इसे स्वमन्तव्य के विपरीत बताकर स्वयं को विधवा विवाह का समर्थक कहा और उस विधवा को मथुरा से कलकत्ता लाने से मनाकर दिया, क्योंकि कलकत्ता लाने का अर्थ था-पुनर्विवाह को रोकना। इसके पश्चात् देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने रवीन्द्रनाथ टैगोर को यह दायित्व सौंपा कि वे मथुरा जाकर उसे कलकत्ता ले आएं। रवीन्द्रनाथ मथुरा जाकर उसे कलकत्ता ले आए। कथनी और करनी के भेद का इससे बड़ा उदाहरण क्या हो सकता है?

समाज के एक बड़े वर्ग को अस्पृश्य कहकर धार्मिक शैक्षणिक अधिकारों से वञ्चित किया जा रहा था। हजारों वर्षों के अन्तराल के बाद महर्षि ऐसे प्रथम आचार्य थे, जिन्होंने इस वर्ग के लिए न केवल समान अधिकार की वकालत की, अपितु अपने व्यवहार से इसे प्रदर्शित भी

किया। आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् पूना पहुँचने पर जुलाई सन् १८७५ ई. में महर्षि के अनेक प्रवचन हुए। इसी मास की पूना की महत्त्वपूर्ण घटना है- शूद्रातिशूद्रों की पाठशाला (महात्मा ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित एवं संचालित) में जाकर इस वर्ग को वेद का उपदेश करना। यह स्मरणीय है कि महर्षि जन्मना जाति-प्रथा का विरोध करते थे। इसी कारण आयोजकों ने पत्र लिखकर उपदेश के लिए निमन्त्रित किया था। यद्यपि तथाकथित आभिजात्य वर्ग ने एतादृश उपदेशों से रुष्ट होकर महर्षि के पूना से विदाई जुलूस-शोभायात्रा पर नाली से गन्दा पानी और कीचड़ फेंका था।

उक्त समय में महर्षि ने स्त्री एवं समाज के निम्न कहे जाने वाले वर्ग के शैक्षणिक, धार्मिक एवं सामाजिक उत्थान का लक्ष्य अपने उपदेशों एवं ग्रन्थों के माध्यम से निर्धारित किया।

सन् १८५७ की क्रान्ति के पश्चात् भारतीय शासन का नियन्त्रण ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकार से ब्रिटेन की महारानी के अधिकार में चला गया था। इसका स्पष्ट अर्थ था- शासन पर ब्रिटेन की पकड़ का मजबूत होना। सन् १८५७ की क्रान्ति के विफल होने के पश्चात् जनमानस में नैराश्य का भाव था जो देशी रियासतें थीं, वहाँ पर भी ब्रिटेन के प्रतिनिधित्व के रूप में अंग्रेज रेजिडेन्ट रहता था। उसकी सहमति के बिना कोई महत्त्वपूर्ण निर्णय नहीं लिया जा सकता था। इतनी विषम परिस्थितियों में भी महर्षि का-स्वदेशी राज्य को सर्वोपरि कहना स्पष्ट करता है कि ब्रिटिश राज्य से मुक्ति तथा स्वराज्य प्राप्ति भी महर्षि का अभिमत लक्ष्य था। पिता के साथ दर्शनार्थ आए ठाकुर माधोसिंह को महर्षि ने स्वदेशी वस्त्र धारण करने के लिए प्रेरित किया। यह घटना भी महर्षि की राष्ट्र भक्ति-स्वदेश भक्ति का उदाहरण है।

महर्षि के लक्ष्य वैविध्य के अन्तर्गत एक अन्य ऐसा लक्ष्य भी है, जिस ओर किसी पूर्ववर्ती आचार्य ने दृष्टिपात ही नहीं किया। वह है- धर्मग्रन्थों का पुनःपाठ। महर्षि का अभिमत था कि जो भी संस्कृत भाषा में धर्मग्रन्थ के नाम से लिख दिया गया है, वह सभी स्वीकार्य नहीं हो सकता। स्वीकार्यता का आधार वेदमूलकता ही है। अर्थात् प्राचीन वाङ्मय में जो वेद विरुद्ध प्रक्षेप कर दिया गया है, उसे निकालकर इन ग्रन्थों का पुनःपाठ। अपने एक विज्ञापन में महर्षि ने इसे स्पष्ट कर दिया था-

''मेरे बनाए सत्यार्थप्रकाश वा संस्कारविधि आदिग्रन्थों में गृह्यसूत्र वा मनुस्मृति आदि पुस्तकों के वचन बहुत से लिखे हैं, वे उन-उन ग्रन्थों के मतों को जनाने के लिए लिखे हैं। उनमें से वेदार्थ के अनुकूल का साक्षिवत् प्रमाण और विरुद्ध का अप्रमाण मानता हूँ।'' यह विज्ञापन ऋग्वेद और यजुर्वेद भाष्य के अंक १ और २ के टाइटल पृष्ठ पर छपा था। (विस्तार के लिए द्रष्टव्य- महर्षि दयानन्द सरस्वती का महत्त्वपूर्ण पत्रव्यवहार-पृष्ठ ९९-१०० तथा २४ अक्टूबर १८७४ को मुम्बई में दिया विज्ञापन-द्र. वही, पृष्ठ २०-२३)

इस प्रकार महर्षि के जीवन लक्ष्य-वेद की निर्भ्रान्तता, ईश्वर के यथार्थ स्वरूप का प्रतिपादन, आर्ष शिक्षा प्रणाली का प्रचार, समाज के प्रत्येक स्त्री-पुरुष को समान शिक्षा तथा धार्मिक अधिकार, बालविवाह की कुप्रथा का निवारण, विधवा का पुनर्विवाह, जन्मना जातिप्रथा के स्थान पर गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का प्रचार, गौ संरक्षण, स्वदेशी वस्तुओं तथा स्वदेशी राज्य के साथ-साथ धार्मिक ग्रन्थों का पुनः पाठ आदि महत्तम थे और आर्यसमाज को यही लक्ष्य महर्षि से उत्तराधिकार में प्राप्त हुए हैं। इनमें कितनी उपलब्धि हुई यह अग्रिम अंक में-

क्रमशः

डॉ. वेदपाल

कुछ उद्‌गार - विचार

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

दुर्घटनाग्रस्त होने पर आघात तो अच्छा लगा तथापि बच गया। कैसे बच गया यह तो सर्वज्ञ कृपालु प्रभु ही जाने। महीनों पराश्रित चारपाई पकड़नी पड़ी। परिवार ने सेवा भी अच्छी की और चेतावनी भी दी कि शेष जीवन जीने के लिये बहुत सावधान रहो। डॉक्टरों का कहना है कि इस आयु में तो कोई बिरला ही इतना ठीक होकर इतना कार्यरत हो सकता है।

मैंने समझा कि प्रभु ने ऋषि मिशन के लिये नवजीवन दिया। मैं सात मास के पश्चात् पूर्ववत् आठ-आठ घण्टे और इससे भी अधिक लेखन कार्य करने लग गया तो हैदराबाद से आर्यसमाज के एक सर्वमान्य बलिदानी क्रान्तिकारी आर्यनेता के सुपुत्र श्री भक्तराम जी तथा आर्यजगत् के एक माननीय कर्मठ मिशनरी मेरे अत्यन्त अभिन्न बन्धु पं. प्रियदत्त जी ने क्रान्तिकारी पं. श्री गंगाराम जी का प्रेरणाप्रद जीवन-चरित्र लिखने के लिये भावपूर्ण निवेदन किया। श्री गंगाराम जी एडवोकेट वानप्रस्थी मेरे भी कृपालु थे सो मैंने झट हाँ कर दी।

जीवन-चरित्र की मुद्रण क्रिया आरम्भ- मैंने देश व आर्यसमाज के लिये जीवन भर संग्राम करने वाले उस तपःपूत की जीवनी लिखने के लिये दिन-रात एक कर दिया। उनके जीवन की सामग्री के लिये आर्यसमाज में केवल इन्हीं दो ने सहयोग किया। कुछ सामग्री, पुराने दस्तावेज़ स्रोत मेरे पास थे सो लेखनी चलती रही। स्रोत खोजने में भी लगा रहा। नये-नये स्रोत मिलने पर तीन बार पाण्डुलिपि नये सिरे से आरम्भ करनी पड़ी। आर्य बन्धुओं! ईश्वर को धन्यवाद दो कि इस धर्मरक्षक, देशभक्त कर्मवीर सेनानी के साहसिक, त्यागपूर्ण और जन-जन को अनुप्राणित करने वाली ऐसी-ऐसी अद्वितीय घटनायें प्राप्त हो सकीं जिन्हें पढ़कर हर कोई यह मानेगा कि ऐसी प्रेरक व अनुप्राणित करने वाली घटनायें केवल और केवल आर्यसमाज के इतिहास में ही मिलती हैं। अब देखना है कि इस पुस्तक के प्रकाशित होने पर आर्यसमाज के समर्पित सेवक इसके प्रसार प्रचार में कितना उत्साह दिखाते हैं।

कुछ अनूठी ऐतिहासिक घटनायें- मैं यहाँ कुछ एक ऐसी बेजोड़ घटनायें देता हूँ। निर्णय प्रबुद्ध इतिहास प्रेमी करें क्या ऐसी सामग्री देश की किसी अन्य संस्था के इतिहास में मिलती है?

डूबती विधवा को बचाने का कीर्तिमान- श्रीमान् पं. गंगाराम आर्य कुमार अवस्था पार करके यौवन की चौखट पहुँचे तो स्कॉटिंग के कैम्प में सम्मिलित हुये। आर्यसमाजी विचारधारा से विभूषित हो चुके थे। आप गोदावरी नदी के तट पर खड़े थे। वहाँ दो दुखिया हिन्दू विधवा युवतियों ने आत्महत्या करने के लिये नदी में छलाँग लगा दी। नदी तट पर इस कारण शोर मचाने वाले तो बहुत थे।

आर्यवीर गंगाराम ने आव देखा न ताव झट से उन्हें बचाने के लिये नदी में कूद पड़े। डूबती हुई एक युवती को डूबने से बचा लिया। डूब रहे दो जनों को तो एक साथ कोई भी नहीं बचा सकता। इस शौर्य के लिये आर्यवीर गंगाराम की बहुत प्रशंसा वहाँ हुई। निज़ाम सरकार ने नारी रक्षा की शूरता (Galantry) पुरस्कार से आपको सम्मानित किया। हैदराबाद की मतान्ध स्टेट में किसी दुखिया हिन्दू विधवा की रक्षा करने के लिये यह पहिला तथा अन्तिम सम्मान था। फिर किसी को यह सम्मान न दिया गया। पूरे भारत में भी किसी को किसी दुःखी विधवा के रक्षा के लिये ऐसे सम्मान की घटना सुनने, पढ़ने में नहीं मिलती।

दुखिया विधवा की रक्षा को कूद पड़ा जो नदिया में।
वह दयानन्द का देव दुलारा नामी गंगाराम था।।

आर्यसमाज अपने इस प्राणवीर के जीवन का पहली घटना पर- इस इतिहास पर जितना भी अभिमान करे थोड़ा है।

एक और इतिहास रचा- सार्वदेशिक सभी ने आर्य सत्याग्रह का संचालन अपने हाथ में लेकर स्वामी स्वतन्त्रानन्द को सत्याग्रह आन्दोलन का फील्ड मार्शल बनाया। स्वामी जी ने सत्याग्रह को चलाने के लिये स्टेट के कुछ परखे कर्मवीरों को कुछ विशेष कार्य सौंपे। ऐसे साहसी प्राणवीरों में एक विशेष युवक गंगाराम था। स्वामी जी ने इसे स्टेट के नगरों व ग्रामों से सत्याग्रहियों की मूर्ति का तथा देश भर से आये जत्थों को सत्याग्रह के स्थल पर पहुँचाने का भी काम दिया गया। तीसरा कार्य इन्हें यह सौंपा गया कि आपने पुलिस की गुप्तचरों की पकड़ में नहीं आना। जेल में नहीं जाना। आप पकड़े गये तो दूर-दूर से आये जत्थों को क्या पता कि सत्याग्रह कहाँ करना है?

राज्य में ट्रेन से उतरने वाले, कहीं से भी राज्य में प्रविष्ट होने वाले व्यक्ति की गुप्तचर झट से सरकार को सूचना दे दिया करते थे। जेल जाना तो कठिन नहीं था, परन्तु राज्य के व्यक्ति को जेल जाने से बचना अति कठिन कार्य था।

गंगाराम ने लौहपुरुष द्वारा सौंपे गये ये अति कठिन कार्य छह मास तक सफलता से करके एक बहुत बड़ा कीर्तिमान बनाया। साथ ही ऐसे व्यक्ति को परख कर यह विकट कार्य सौंपना सेनानी की दूरदर्शिता का प्रमाण है।

इस सम्बन्ध में एक अन्तिम घटना- डॉक्टर तथा वकील का अनुभव जब बढ़ जाता है तो उनकी कमाई बढ़ती जाती है। धन मानों उन पर बरसने लगता है। अनाथ शिशु गंगाराम उच्च शिक्षित एडवोकेट बन गया। उसका अनुभव बढ़ गया तो धन उस पर भी बरसने का समय आ गया। गंगाराम जी ने वानप्रस्थ धारण करके घर परिवार का परित्याग कर दिया। यह घटना आर्यसमाज के लिये बहुत महत्त्व रखती है। न जाने अपने इस अद्भुत अनूठे इतिहास का लेखनी व वाणी से आर्यसमाज क्यों प्रचार नहीं करता। हैदराबाद सत्याग्रह बलिदान दिवस तक 'जीवन संग्राम' यह जीवनी प्राप्य हो सकेगी। कर्त्तव्य पालन के लिये आर्य सजग हो जावें।

इतिहास की रक्षा कैसे हो?- आर्यसमाज के लोग भी कहीं-कहीं ऐसी भूलें करते हैं कि उनके कारण आर्यसमाज की बहुत क्षति होती है। भूल सुझाने वाले को कुछ लोग जी भर कोसने लगते हैं सो भूल का सुधार कैसे हो? हरियाणा से ही एक प्रतिष्ठित सुशिक्षित युवक विद्वान् का चलभाष आया कि एक सज्जन जो 'नेता श्रेणी' में आते हैं वह महानुभाव पं. गंगाप्रसाद उपाध्याया जी के ग्रन्थ से सामग्री उठाकर नीचे 'साभार' लिखकर ऊपर अपना फोटो दे देते हैं। यह अनुचित है। आप इस अनर्थ को रोकिये।

रोहतक वाले विद्वान् सज्जन से पहले भी कई कृपालु आर्यों ने चलभाष पर ऐसा आग्रह किया। नेता जी तो नेता हैं। उन्हें कौन रोक टोक सकता है। दु:ख तो मुझे भी होता है। मैं इस तस्करी पर कुछ खरी-खरी लिख दूँ तो मुझे कोसने में नेता जी मचल उठेंगे। आर्यों को सोचना होगा क्या इस तस्करी से समाज की साख बढ़ रही है या घट रही है?

श्रीमान् इन्द्रजित् देव जी का उत्तम लेख पढ़ा- रोहतक से छपने वाले हरियाणा सभा के साप्ताहिक में निज़ाम स्टेट (महाराष्ट्र में) माता गोदावरी जी तथा उसके पति श्रीकृष्ण राव के जीवित जलाये जाने की सुन्दर घटना पर श्री पं. इन्द्रजित् जी का लेख पढ़ा। मैंने ही सबसे पहले सन् १९६५ में इस स्वर्णिम इतिहास की खोजकर आर्यगज़ट उर्दू में तभी एक लेख दिया था। अपनी कई पुस्तकों में तथा लेखों में भी यह घटना प्रचारित करता चला आ रहा हूँ। महाराष्ट्र, कर्नाटक में पहले इसका प्रचार किया फिर देश भर में देश की अखण्डता के लिये सबसे पहले जीवित जलाई गई इस आर्य ललना के बलिदान पर व्याख्यान देता रहा हूँ।

'रक्तरंजित है कहानी' पुस्तक में सन् १९०४ में इसे प्रचारित किया। सन् १९१८ में फिर इसके अगले संस्करण में इसे दिया गया। महाराष्ट्र में पाठ्य पुस्तकों में भी इसे स्थान कहीं तो मिला। वहाँ यह भी छपा था कि इस लेखक ने सब से पहले इस विषय पर लिखा। 'हैदराबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष' में सन् १९७३ में श्री पं. नरेन्द्र जी ने भी यह प्रसंग दे दिया। इस सुन्दर ग्रन्थ के नये संस्करण में भी यह अवश्य मिलेगी। जितना प्रचार इसका हो ठीक है। पुलिस के हत्यारे अधिकारी का नाम हैदरी या हेनरी नाम गढ़न्त है। हैदरी को किस कारण हेनरी बना दिया?

पं. नरेन्द्र जी की पिंजरे में बन्द होने की घटना के समय घटी एक घटना पर मेरा एक लोकप्रिय गीत-

'पिंजरे वाला शेर दहाड़ा'

भी कई आर्य सामाजिक पुस्तकों में छप चुका है। उसमें भी माता गोदावरी व उसके पति का उल्लेख है। मैंने जब पहली बार इस इतिहास पर आर्यगज़ट में लिखा था तो अपनी शैली व स्वभाव के अनुसार अपने जानकारी के स्रोत की भी चर्चा की। अब इन्द्रजित् जी ने तो अपनी जानकारी का स्रोत दे दिया है उनके प्रकाशक व लेखक को अपना स्रोत बताने में सम्भवत: रुचि नहीं। इन्द्रजित् जी ने उनके बच्चे के बलिदान का भी उल्लेख किया है। मुझे एक नहीं कई जानकारी रखने वाले उसी क्षेत्र के बन्धुओं ने कलम महाराष्ट्र में इसकी विस्तृत व प्रामाणिक जानकारी दी। मुझे बच्चे के बलिदान के बारे में न तो धाराशिव के बापू मास्टर जी, न ही श्री वामनराव जी, न ही शेषराव जी वाघमारे और न ही डॉ. डी.आर. दास जी की कोटि के प्रमुख आर्य नेताओं ने कभी कुछ बताया।

इतिहास की प्रामाणिकता व रक्षा के लिये मैं महाराट्र सम्पर्क कर रहा हूँ। यदि यह कथन सत्य है तो मैं भी लाजपत जी को धन्यवाद दे दूँगा। वैसे यह अत्यन्त आश्चर्य का विषय है कि मुझे न तो सोलापुर निवास काल में मराठवाड़ा, कर्नाटक तथा तेलंगाना के आर्यों ने बच्चे के बलिदान के बारे में एक शब्द तक कहा। श्री वामनराव, श्री शेषराव वाघमारे, श्री गम्पा जी, डॉ. डी.आर.दास, पं. प्रेमचन्द, पं. रुद्रदेव जी आदि के बारे में कौन ऐसा सोच सकता है कि आर्यसमाज के काल के इतिहास की उनको अधूरी जानकारी हो। वे लोग आर्यसमाज के निर्माता थे। इतिहास पुरुष थे। यह पता चलना चाहिये कि इतने लम्बे समय तक बच्चे के बलिदान की घटना दबी क्यों व कैसे रही?

दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय- आचार्य उदयवीर जी ने, स्वामी सत्यप्रकाश जी और स्वामी सर्वानन्द जी ने सात खण्डों के इतिहास पर अपनी पीड़ा व्यक्त करते हुये जब यह कहा, ''इसके बारे में कुछ नहीं कह सकते।'' तो बहुत कुछ कह दिया। स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास आर्यसमाज को नये-नये इतिहासकार दे रहा है। मुझे सूचना दी गई है कि एक ने यहाँ तक लिखा है कि 'दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार' नाम की संस्था यह लाहौर का श्रीमद्दयानन्द उपदेशक विद्यालय है। मुझसे पूछा गया है क्या यह सत्य है?

मुझे तो इस पर कोई प्रतिक्रिया देते हुये डर लगता है। जिन स्कॉलरों ने अपनी पुस्तकों में ऐसे-ऐसे ज्ञान के चमत्कार दिखाये हैं। वे मुझे क्षमा क्यों करेंगे? रगड़ेंगे। अच्छा हो जानकारी श्री पूनमसूरी से मांगी जावे। वह पता नहीं देंगे तो फिर इतिहास की रक्षा करनी ही पड़ेगी।

विद्या की प्रगति कैसे?

वर्णोच्चारण, व्यवहार की बुद्धि, पुरुषार्थ, धार्मिक विद्वानों का संग, विषय कथा-प्रसंग का त्याग, सुविचार से व्याख्या आदि शब्द, अर्थ और सम्बन्धों को यथावत् जानकर उत्तम क्रिया करके सर्वथा साक्षात् करता जाय। जिस-जिस विद्या के कारण जो-जो साधनरूप सत्यग्रन्थ है उन उनको पढ़कर वेदादि पढ़ने के योग्य ग्रन्थों के अर्थों को जानना आदि कर्म शीघ्र विद्वान् होने के साधन हैं। **(व्यवहार भानु)**

भारतीय राजनीति के सुखद संकेत

आचार्य रामनिवास 'गुणग्राहक'

अगणित अमर बलिदानों के फलस्वरूप भारत को मिलने वाली स्वतन्त्रता महात्मा गाँधी के आभामण्डल की चकाचौंध में अपने प्रारम्भिक दिनों में ही रास्ता भटक गई थी। लोकतान्त्रिक मूल्यों और जनभावना की बात करें तो वह पूर्णत: सरदार वल्लभभाई पटेल के पक्ष में था। सरदार वल्लभभाई पटेल का कृतित्व और व्यक्तित्व भारत की सांस्कृतिक विरासत का प्रतिबिम्ब जैसा था, मगर न लोकतन्त्र सफल रहा और न जनभावनाओं का सम्मान हुआ। इन सबसे हटकर गाँधी जी ने अपने आभामण्डल के प्रभाव का प्रयोग करके एक ऐसे व्यक्ति को सत्तासीन कर दिया, जो देश के धर्म-दर्शन तथा सभ्यता-संस्कृति के प्रति नाममात्र भी अनुराग नहीं रखता था। हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी को बलात् देश पर थोप कर नेहरु जी ने प्रमाणित कर दिया कि गाँधी जी ने अनुचित ढंग से अभारतीय सोच वाले व्यक्ति को देश की सत्ता सौंपकर भारत को सच्ची स्वतन्त्रता से वञ्चित कर दिया था। लोकतान्त्रिक मूल्यों को तिलाञ्जलि देकर सत्तासीन हुए नेहरु जी ने कांग्रेस से भी लोकतन्त्र को तिलाञ्जलि देकर उसे अघोषित विरासत बना लिया। जब कांग्रेस नेहरु परिवार, जिसे बाद में उनकी पुत्री इन्दिरा गाँधी के गाँधी उपनाम के कारण गाँधी परविार की पैतृक सम्पत्ति जैसी बन गई तो बाद में बनने वाले प्राय: सभी राजनैतिक दल किसी न किसी परिवार के प्रभुत्व वाले बनकर रह गये। इस प्रकार भारत की राजनीति कुछ घरानों की अकांक्षाओं की पूर्ति का साधन बनकर रह गई। इन तिकड़मी घरानों ने अपने निजी स्वार्थों के लिए संविधान, लोकतन्त्र, देश की अस्मिता सबको ताक पर रख दिया।

कांग्रेस की अराष्ट्रीय नीतियों का विरोध तो प्रारम्भिक दिनों से ही होने लगा था। कांग्रेस ने कश्मीर की कुटिलता के चलते श्यामाप्रसाद मुखर्जी की बलि लेकर भी अभारतीय विचारधारा अर्थात् मुसलमान-ईसाई समुदाय के तुष्टिकरण की नीति में तनिक भी परिवर्तन नहीं किया। कांग्रेस के तुष्टिकरण के विरुद्ध अहर्निश संघर्ष करने वाले जनसंघ ने अपना कायाकल्प करके जब भारतीय जनता पार्टी का रूप धारण किया, तब भी कांग्रेस को गाँधी जी का प्रतिबिम्ब माननेवाले भारतीय जनमानस ने उसे उत्साहित मन से स्वीकार नहीं किया। अटलबिहारी वाजपेयी अत्यन्त लोकप्रिय नेता होकर भी घरानों में सिमटी भारतीय राजनीति के असफल मोहरे बनकर रह गये। वे लाख चाहकर भी अपनी स्वाभाविक चेतना के साथ चुनौतियों का सामना नहीं कर सके। लगता है नई शताब्दी अपने अंक में कुछ ऐसा लेकर प्रकट हुई, जो भारतीय राजनीति पर लगे तुष्टिकरण के कलंक के साथ परिवारवाद के पंक में भी निष्कलंकता का प्रतीक बन चुके कमल को पूर्ण यौवन प्रदान कर सके। वर्तमान में भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी का उदय नई सदी के उषाकाल में ही हुआ था। अपनी अथक संघर्षशीलता और दुर्लभ सहनशक्ति के बल पर, भविष्य के बहुत अन्दर तक झाँककर वहाँ के लिए वर्तमान जैसी योजना बनाने वाली स्वप्नदर्शी शक्ति के धनी मोदी जी विषय परिस्थितियों में भी अवसर खोजते रहते हैं। राजनीति के इस अनगढ़ व्यक्तित्व ने राजनीति के चौंकाने वाले मापदण्ड गढ़कर युगपरिवर्तन की जो नींव रखी है, वह देश ही नहीं दुनिया को भारतीय धर्म-संस्कृति के समुज्ज्वल आलोक से भरपूर करनेवाली भूमिका तैयार करेगी।

२०१४ से पहले कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था कि एक दशक से भी कम समय में भारत की राजनीति दो ध्रुवीय (भाजपा और अभाजपा) हो जायेगी।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी के बहुआयामी अद्‌भुत व्यक्तित्व ने देखते ही देखते असम्भव को सम्भव बना दिया। कहने की आवश्यकता नहीं कि भाजपा का वर्तमान प्रभाव मोदी जी की दूरदृष्टि और न्यायपूर्ण निर्णयों का ही परिणाम है। कोई भी पुरुष न तो पूर्ण होता है और न सबकी आकांक्षाओं पर खरा उतर सकता है। प्रधानमन्त्री के साथ वैचारिक मतभेद और विरोध हो सकता है, मगर अपने व्यक्तित्व को स्वयं ही गढ़कर अपना रास्ता अपने आप बनाना और रास्ते के काँटे-कंकड़ों की चुभन की चिन्ता न करते हुए आगे बढ़ने का अदम्य उत्साह भारतीय राजनीति के किसी दूसरे व्यक्ति में नहीं दिखता। बिना एक भी चुनाव लड़े सीधे गुजरात के मुख्यमन्त्री के रूप में राजनीति में पदार्पण करने वाले नरेन्द्र मोदी ने गुजरात की उपलब्धियों को आधार बनाकर केन्द्र का पहला चुनाव जीता और लोकतन्त्र का मन्दिर कहे जाने वाले संसद भवन की चौखट पर सिर झुकाकर पहली बार में विजयी भाव के साथ देश की सत्ता सम्भाली। प्रधानमन्त्री के रूप में एक कार्यकाल के बाद होने वाले चुनावों में एक नूतन लोकध्वनि सुनने को मिली। लोग कहते हुए सुने गये कि अब तक की राजनीति में एम.पी. मिलकर पी.एम. बनाते थे, मगर इस बार बहुतों को एम.पी. बनाने में पी.एम. की महती भूमिका है। यद्यपि यह कहना न्यायपूर्ण न होगा कि भाजपा के शेष नेता नितान्त नगण्य रहे। अमित शाह, राजनाथ सिंह, नितिन गड़करी और सुषमा स्वराज जैसे तेज तर्रार नेताओं से लेकर धरातल पर काम करने वाले समर्पित कार्यकर्त्ताओं तक के श्रम को भुलाना अपराध जैसा होगा। भाजपा से जुड़े हर नेता व कार्यकर्त्ता के तप का प्रताप है कि आज भाजपा विजय रथ पर आरुढ़ होकर देश में दिग्विजय के सपने को साकार करने में लगी है, मगर इन सबमें जो तेज, जो उत्साह और समर्पण के भाव दिख रहे हैं, वे कहीं न कहीं मोदी जी के आदर्श व्यक्तित्व से अनुप्राणित अवश्य हैं।

मोदी जी की दृष्टि कभी छोटे और क्षणिक लाभ के लिए भटकती नहीं दिखी। सन् २०२०-२१ में २०४७ के लिए योजना बनानेवाले मोदी की दृष्टि २०२४ व २९ को न लेकर चले, यह कोई मान सकता है? उत्तरप्रदेश के चुनाव जीतते ही भारत की राजनीति के लिए परिवारवाद को सबसे बड़ा कलंक कहना और विकास की सतत धारा के लिए कमर कसना, विरोधियों के लिए मैदान बदलने का खुला आह्वान है, जिसे स्वीकार करना किसी के लिए सम्भव नहीं। जातिवाद की जकड़न साम्प्रदायिकता के सींखचों और क्षेत्रीयता के छोटे-छोटे टुकड़ों में बँटी भारत की राजनीति को राष्ट्र की सुरक्षा, समृद्धि और सबका विकास, सबका विश्वास जैसे खुले मैदान में लाने के लिए कितनी बड़ी सोच और कितना बड़ा हृदय होना चाहिए, यह अनुमान भी कोई बड़े हृदय वाला ही कर सकता है। राजनैतिक जीवन की राहें बड़ी फिसलन भरी होती है, एक भाषण, एक निर्णय और एक अनुपयुक्त कदम व्यक्ति के पूरे राजनैतिक जीवन को अन्धकार में धकेल देता है। ऐसे में राजनैतिक शिखर तक पहुँचना और बने रहना तलवार की धार पर चलने जैसा है। मोदी जी गत दो दशकों से तलवार की धार पर चलकर ही यहाँ तक पहुँचे हैं। किसान आन्दोलन के नाम पर देश की कुटिल राजनीति ने मोदी जी की किसान हितैषी योजना को भी अपने वाक् जाल के द्वारा कतिपय किसानों को भ्रमित करके उसके विरुद्ध खड़ा कर दिया तो परिस्थिति की संवेदनशीलता को भाँपकर मोदी जी ने जिस कुशलता के साथ स्थिति को सम्भाला, उस निर्णयशीलता ने राष्ट्रोदय के सपने के लिए जीनेवालों को अपनी संकटकाल से निपटने की अपूर्व क्षमता का परिचय देकर एक सशक्त भरोसा दिया है।

भारतीय राजनीति में भाजपा और कम्युनिस्ट दलों के अतिरिक्त जितने भी दल थे, वे वस्तुतः राजनैतिक दल कहलाने की पात्रता भी नहीं रखते थे। कुछ कपटी लोगों ने राष्ट्रीयता और लोकतान्त्रिक नारेबाजी के आवरण में विशुद्ध परिवारवाद का खेल खेला। लोकतन्त्र के

लिए लड़ने का ढोंग और जनता की भलाई सम्बन्धी भाषण केवल और केवल भोली और भावुक जनता का अपने पक्ष में मतदान तक लाने का अल्पकालिक अभियान भर है। जीतने के बाद सत्ता पाने के लिए जो स्वार्थपूर्ति के समीकरण बनाये जाते हैं, वही इनके चरित्र के परिचायक हैं। कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि भारत जैसे विशाल और एक महान् सांस्कृतिक परम्परा के पुरोधा राष्ट्र का राजनैतिक भविष्य स्वार्थ साधने में तत्पर कुछ नीतिनिपुण लोगों के हाथों की कठपुतलियों जितना ही स्वतन्त्र और सजीव कहा जा सकता था। जहाँ तक प्रश्न कम्युनिस्ट दलों का है, इतिहास साक्षी है कि कम्युनिस्ट विचारधारा कभी भारतीय सभ्यता संस्कृति और धर्म-दर्शन के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं कर सके और न भविष्य में उनसे कोई आशा की जा सकती है। वर्तमान में ये चीन के प्रबल पक्षपोषक बने फिरते है। १९६२ में इन्होंने खुलकर चीन के लिए काम करते हुए जो राष्ट्रघात किया, वह किसी से छुपा नहीं है। ऐसी स्थिति में भारतीय जनमानस कम्युनिस्टों के साथ तो लग नहीं सकता। सौभाग्य से भाजपा को नरेन्द्र मोदी के रूप में एक ऐसा कुशल व सक्षम नेतृत्व मिल गया जो देश की सभ्यता-संस्कृति, धर्म-दर्शन और माटी के प्रति सच्ची और अगाध श्रद्धा से अनुप्राणित है। देश खुली आँखों से देख रहा है कि मोदी जी के प्रधानमन्त्री बनने के बाद जहाँ भारत के जनमानस में अपूर्व उत्साह और आत्मविश्वास हिलोरें ले रहा है, वहीं विश्व पटल पर भारत की एक सबल और सक्षम छवि आकार ले रही है।

स्वार्थ बुद्धि से उपजी हठवादिता ने तो कभी सत्य का सम्मान किया ही नहीं। कमाकर खाने की अपेक्षा जो अनुदानों और ऋण-माफी जैसी प्रवृत्तियों से स्वयं को पालते-पोषते हैं, वे श्रम द्वारा राष्ट्र की समृद्धि को सींचने वाले पुरुषार्थी पुरुषों को अपना शत्रु मानते आये हैं, और मानते रहेंगे। मोदी जी स्वयं इतना परिश्रम करते हैं कि वे दूसरों के लिए ऊँचे आदर्श स्थापित कर सकें। उनकी दिनचर्या और कार्यशैली से लेकर निर्णय क्षमता और क्रियान्वयन तक सबकुछ ऐसा है जो पहले न देखा गया और न किसी की कल्पना में ही आ सका। ऐसी सम्भावना भी बहुत कम है कि भावी राष्ट्रनायक मोदी जी के इस समर्पित श्रम के आस-पास भी पहुँच सकें। मोदी जी की राष्ट्रीय श्रम-साधना को जो निकटता से देख रहे हैं, गम्भीरता और व्यापकता से समझ और स्वीकार रहे हैं, वे डंके की चोट यह घोषणा कर सकते हैं कि देश जिस अभूतपूर्व संकट से जुझ रहा था, उससे निकलने के लिए जैसे पौरुषवान्, परिश्रमी और पराक्रमी नेतृत्व की आवश्यकता थी, मोदी जी के व्यक्तित्व में वह सब कुछ है। मैं यह कहने का दुस्साहस नहीं कर सकता कि मोदी जी से कोई भूल या गलती नहीं हुई होगी। मानवीय भूलों व न्यूनताओं के लिए मोदी जी की आलोचना करना कहीं भी अनुचित नहीं, स्वयं मोदी जी ऐसी स्वस्थ आलोचना का स्वागत करते हैं, मगर उनके युगान्तरकारी, ऐतिहासिक कार्यों की अनदेखी करके केवल दोषदर्शन करना किसी दृष्टि से उचित नहीं। इन्दिरा गाँधी के बाद से ही भारत की राजनीति में सत्ता की जो बन्दरबाँट देखी गई, राजनीति के घाघ खिलाड़ियों ने व्यक्तिगत दल बनाकर राजनीति को गठबन्धन की जिस दलदल में झोंक दिया था, उसमें से निकालकर चामत्कारिक ढंग से मोदी जी ने देश की राजनीति को दो दलीय-भाजपा-अभाजपा बना दिया है, यह उनकी देश और दुनिया के लिए बहुत बड़ी ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में युगों तक अमिट आभा बिखेरती रहेगी।

ग्राम- सूरौता, भरतपुर, राज.। मो. ९०७९०३९०८८

वैचारिक क्रान्ति के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़े।

अग्नि सूक्त-४४

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर
लेखिका - सुयशा आर्य

प्रिय पाठक! परोपकारी पिछले कई वर्षों से आपकी सेवा में डॉ. धर्मवीर जी के वेद प्रवचनों को प्रकाशित कर रही है। इसी शृंखला में ऋग्वेद के प्रथम सूक्त 'अग्निसूक्त' की व्याख्यान माला प्रकाशित की जा रही है। प्रवचनों को लेखबद्ध करने का कार्य डॉ. धर्मवीर की ज्येष्ठ पुत्री श्रीमती सुयशा कर रही हैं।
-सम्पादक

उपत्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वयम्। नमो भरन्त एमसि।।

इस वेदज्ञान की चर्चा के प्रसंग में हम ऋग्वेद के पहले मण्डल के प्रथम सूक्त की चर्चा कर रहे हैं। हमारी चर्चा का केन्द्र सातवाँ मन्त्र है जिसमें उपासना की बात कही गयी है। इस मन्त्र का ऋषि मधुच्छन्दा है, इसका देवता अग्नि है और इसका छन्द गायत्री है। हमने एक-एक शब्द पर विचार करते हुए इस मन्त्र के प्रत्येक शब्द पर बहुत गहरायी से विचार किया, विस्तार से विचार किया। इसमें उपासना की जो बात है, वो जिन शब्दों में आयी है, उन पर थोड़ा सा ध्यान देने से हमको चीजें बहुत स्पष्ट प्रतीत होती है। उपासना प्रतिदिन करनी है, उपासना का समय प्रात:काल का और सायंकाल का है। उपासना, स्तुतिपूर्वक, प्रार्थनापूर्वक करनी है।

यह उपासना जो है वो परिणाम है अर्थात् जब हम बुद्धि के साथ काम करेंगे तो **त्वा उप एमसि।** हम बुद्धिपूर्वक, उद्देश्यपूर्वक चलेंगे, विधिपूर्वक चलेंगे, तो निश्चित रूप से हम तेरे पास पहुँच जायेंगे, हमारी उपासना हो जाएगी। यह उपासना हो जाती है तो उसका परिणाम ऋषि दयानन्द कहते हैं- उपासना से परमात्मा का साक्षात्कार और उसकी प्राप्ति हमको हो जाती है। तो पहुँचने से प्राप्ति। पहले तो पहुँचना और फिर प्राप्त होना। विधिपूर्वक चले, तो पहुँचे, पहुँचे तो मिले। तो चलने से मिलने तक की जो यात्रा है, वो हमारी उपासना है। चलना हमारी प्रार्थना है। उपासना, उसका परिणाम, मिलना है। **नमो भरन्त त्वा उप एमसि**, हम नमस्कारपूर्वक तेरे पास आते हैं। जब हम किसी चीज को जान जाते हैं, समझ जाते हैं। जब वो चीज हमें आवश्यकता के रूप में दिखाई देने लगती है, तब हम अपने आपको रोक नहीं सकते। हम चाहें कि उसके बिना रह जायें (हम अज्ञान में उसके बिना रह सकते हैं, आवश्यकता के बिना रह सकते हैं) लेकिन अत्यन्त आवश्यक है, उपलब्ध है, ज्ञान भी है, फिर हम उसके बिना नहीं रह सकते। तो उपासना, ईश्वर की प्राप्ति फल परिणाम है। उसकी प्राप्ति के यदि सारे साधन हमारे पास हैं, हमने उसकी स्तुति की, प्रार्थना की है तो निश्चित रूप से वह हमारी उपासना के रूप में हमें मिल जाएगा। इसलिए उपासना के बारे में ऋषि दयानन्द कहते हैं- ''जैसे शीत से पीड़ित व्यक्ति अग्नि के प्राप्त होने पर शीत से मुक्त हो जाता है, वैसे ही उपासना से परमेश्वर को प्राप्त किया व्यक्ति संसार के दु:खों से अपने को छुड़ा लेता है, मुक्त कर लेता है।'' तो उपासना किए बिना हमारे दु:ख छूट नहीं सकते। अर्थात् उपासना हमारा दु:खों से मुक्ति का साधन है तो हमने पीछे एक बात को देखा था, यदि उपासना से बड़े सुख मिल सकते हैं, तो निश्चित रूप से उपासना से छोटे सुख भी मिल सकते हैं। संसार का बड़ा सुख मुक्ति है, ईश्वर की प्राप्ति है, संसार से छूटना है। और सुख नाम की वस्तु संसार में भी थोड़ी बहुत है। तो यह पक्का है,

यह निश्चित है कि उपासना से वो चीजें भी हमें प्राप्त होती हैं। मुक्ति का उपासना उपाय है, साधन है। संसार में भी यही है। भोजन आपको भूख से मुक्त करने का उपाय है। यदि आपको भूख की परिस्थिति में भोजन की उपलब्धि हो जाए तो परिणाम होगा, भूख से मुक्ति। पानी की इच्छा की स्थिति में, पानी के मिलने से, प्यास से मुक्ति होगी। तो ऐसे ही जो उपासना है वो मुक्ति है, उपासना है पाना, उपासना है जुड़ना, उपासना है, उसके साथ होना। जब मैं उसके साथ हो जाऊँगा, जुड़ जाऊँगा तो निश्चित रूप से उसके कारण से होने वाले लाभ मुझे अनायास मिलेंगे। मैं जिस स्थान से जुड़ जाता हूँ, वहाँ के हानि लाभ मुझसे जुड़ जाते हैं। जिन व्यक्तियों से जुड़ता हूँ, उनका अच्छा-बुरा मुझसे जुड़ जाता है, जिस ज्ञान-विज्ञान से मैं जुड़ जाता हूँ उसका लाभ मुझे मिलने लग जाता है। तो एक सोचने की बात है जब मैं परमेश्वर से जुड़ जाता हूँ, तब मुझे परमेश्वर से होने वाले लाभ से वंचित कोई कैसे रख सकता है? तो उपासना वो चीज़ है जिसके होने पर वो परिणाम अवश्य होता है। उपासना के बारे में चर्चा करते हुए छान्दोग्योपनिषद् में एक बड़ी सुन्दर पंक्ति लिखी है- यथेह क्षुधिता बाला मातरं पर्युपासत सर्वाणि भूतानि-अग्निहोत्रमुपासते। अर्थात् उपासना वो विवशता है, वो मजबूरी है, वो उत्कण्ठा है, अन्दर की वो माँग है जिसको पूरा किए बिना व्यक्ति रुक नहीं सकता। उसके बिना वह छूट नहीं सकता। तो जिस क्षण मेरे अन्दर परमेश्वर की उत्कण्ठा, इच्छा होने लगे, उसके लिए व्याकुलता होने लगे, बहुत प्रबल आवेग होने लगे, तो वह आवेग का समय है, वह मेरी उपासना का काल है। जैसे भूखे बच्चे माँ की उपासना करते हैं अर्थात् जब बच्चे को भूख नहीं हो, माँ उसको पुकारती रहती है, पर वो आता है क्या? वो उसको याद करता है क्या? जैसे ही उसे भूख लगती है या भय लगता है, उसे किसी चीज की आवश्यकता होती है, तो वह तत्काल माँ का स्मरण करने लगता है। जैसे बहुत भूख से व्याकुल बालक, माँ को पुकारता है वैसे ही एक उपासक परमेश्वर के बिना व्याकुल होकर उसका नाम पुकारता है, उसके नाम की रट लगाता है, उसके अन्दर उसकी गहरी प्यास होती है, उसके अन्दर उसकी गहरी इच्छा होती है, उसे प्राप्त करने की अभिलाषा होती है, इसलिए उसका हर व्यवहार उसको पाने के लिए व्याकुल, कातर हो उठता है। तो उसकी जो परिस्थिति है, उसका नाम उपासना है। **त्वा उप एमसि**, यदि मैं ऐसा हो जाऊँगा, यदि ये गुण मेरे अन्दर आ जायेंगे, तो मैं तेरा उपासक बन जाऊँगा, तेरी उपासना का अधिकारी बन जाऊँगा। तो इस दृष्टि से जब हम विचार करते हैं, तो वह फल, परिणाम क्या करता है- वह मिला हुआ फल फिर मुझे उसके प्रति कृतज्ञ बना देता है। उस कृतज्ञता को फिर मैं बार-बार याद करता हूँ। मेरी इच्छा को देखकर, मेरी प्रार्थना को देखकर, सुनकर जब मुझे परमेश्वर ने पर्याप्त दे दिया, मेरे अन्दर कोई कमी नहीं छोड़ी तो उसकी इस महानता, महत्ता को देखकर मेरे मन में कृतज्ञता के भाव आते हैं। कृतम् जानाति- इसने मुझे दिया था, मुसीबत में मेरी सहायता की थी, विषम परिस्थिति में आर्थिक योगदान दिया था, तो यह जो परिस्थिति है वो तब आती है जब मैं उपासक बन जाता हूँ, उपासना कर लेता हूँ, उपासना का अधिकारी बन जाता हूँ सभी जो भूत हैं, सभी जड़ देवता हैं, पाँचों महाभूत हैं इनको भी इस प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। जैसे एक भूखे मनुष्य को भोजन की होती है। अग्निहोत्र भोजन है, तो कोई भूखा भी होगा और भूखा और भोजन है तो उनके मिलने से तृप्ति भी होगी। वो एक-दूसरे के पूरक भी होंगे। तो यहाँ पर कहा (यथेह क्षुधिता उपासते) देवता लोग अग्निहोत्र की उपासना करते हैं, क्योंकि उनकी भूख अग्निहोत्र से ही मिटती है और वो इस भूख को मिटाने के लिए इसके पास बने रहते हैं, इसकी उपासना करते हैं, बिल्कुल वैसे जैसे एक भूखा बच्चा माँ की उपासना करता है।

तो यहाँ मन्त्र में कहा गया कि मैं वो उपासना कर

रहा हूँ, उस उपासना के जो चरण हैं वो मैंने पूरे कर लिए है, बुद्धिपूर्वक प्राप्त कर लिए हैं, वो चरण मैंने स्तुति के रूप में, प्रार्थना के रूप में, ज्ञान के रूप में, कर्म के रूप में भी प्राप्त कर लिए हैं। तो इस तरह से हमारी उपासना की जो यात्रा है, स्थिति है, उसको इस मन्त्र में बहुत ही सुन्दर ढंग से प्रतिपादित किया गया है। यह हमारे शारीरिक स्तर से लेकर, मानसिक स्तर से लेकर, बौद्धिक स्तर से लेकर आत्मिक स्तर तक गया है। स्वामी जी महाराज लिखते हैं कि हम जब आसन की सिद्धि करते हैं तो फिर उपासना करना बहुत आसान हो जाता है। हमारा जब प्राणायाम पर अधिकार हो जाता है तो हमारा मन हमारे साथ हो जाता है, हमारा मन हमारे अधीन हो जाता है, तो हमारा आत्मा हमें साक्षात् दिखाई देने लगता है। प्राण के नियन्त्रित होने से, प्राण के माध्यम से, क्योंकि मन और इन्द्रियाँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। इन्द्रियाँ स्वतन्त्र तो कुछ काम करती नहीं है, वह काम मन के द्वारा होता है और मन पर नियन्त्रण प्राण के द्वारा होता है। प्राण से जब मन नियन्त्रण में आ जाता है तब हमारा ध्यान, समाधि में बदलने लगता है। यह जो नम्रता का कृतज्ञता का भाव है उपासना के अन्त में प्रकट होता है। हम मन्त्र पढ़ते हैं- ओ३म् नमः शम्भवाय च मयो भवाय च, नमः शंकराय च मयस्कराय च, नमः शिवाय च शिवतराय च। अर्थात् जब हम परमेश्वर की उपासना कर लेते हैं, तो हमारे अन्दर जो कृतज्ञता का भाव उसकी प्राप्ति से, सुख की उपलब्धि का भाव जब हमारे अन्दर आता है, उस सुख का स्मरण करते ही उस सुखदाता का स्मरण हो जाता है और उसके प्रति हम नतमस्तक हो जाते हैं और तुम्हारे मुँह से यह नमस्कार का शब्द निकलता है। तो हम उसके अलग-अलग रूपों को देखकर उसको नमस्कार कर रहे होते हैं। वो हमारा कल्याण करने वाला है, वो सुख देने वाला है, वो सबका भला करनेवाला है, वो शिव है, शिव का अर्थ कल्याण है, शिवतराय च व अत्यधिक कल्याण करनेवाला है। यही बात हम एक जगह जल के लिए देखते हैं। इमा आपः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमाः। जैसे अत्यन्त शिव है, कल्याणकारक है, वैसे ही परमेश्वर शिव है, शिवतर है शिवतम है, वह शान्त है, शान्तर, शान्ततम है। वह जो परमेश्वर का भाव है, शान्ति का, कल्याण का, उस कल्याण के भाव का स्मरण करते हुए उपासक नमस्कार करता है, नम्रता से अपने को उसके प्रति समर्पित कर देता है। वह जो समर्पण की स्थिति है, वह उपासना का चरम है यह उपासना का मत है। इसके लिए कहा गया है जो काम उपासना की किसी पद्धति से सिद्ध नहीं होता, वह ईश्वर प्रणिधान से सिद्ध हो जाता है। पहले एक योगदर्शन का सूत्र हमने चर्चा में लिया था- **ईश्वरप्रणिधानाद् वा**। ईश्वर प्रणिधान ईश्वर के प्रति समर्पण है, वो उपासना की मनःस्थिति का ज्ञापक है। तपः स्वाध्याय-ईश्वर-प्रणिधानानि क्रियायोगः। यह हमारा उद्देश्य है कि हम स्वयं को उसके आगे समर्पित कर दें और उसका आदेश पालन करने के लिए तत्पर हो जायें। उपासना परमेश्वर के आदेश पालन करने का नाम है। जब मैं बैठ कर उपासना करता हूँ, तब मैं उसके साथ मिलकर उसकी बात करता हूँ। जब मैं समूह मैं बैठकर बात करता हूँ, तब मैं चर्चा के द्वारा उसकी उपासना करता हूँ। उसके गुणों का कथन करके उसकी उपासना करता हूँ और जब मैं व्यवहार जगत् में रहता हूँ, तब भी मैं उसको साक्षी मान करके, उसको अपना स्वामी मान करके काम करता हूँ तो उस समय मेरा किए जाने वाला काम स्वामी के आदेश का पालन होने से, उसके नियमों के अनुकूल होने से, वो मेरी उपासना है, मेरी कृतज्ञता है और मेरा समर्पण है। यह मेरा समर्पण किसी एक समय का, छोटी सी अवधि का नहीं है, यह केवल प्रातःकाल सायंकाल का नहीं है। उपासक कह रहा है कि मैं प्रातःकाल सायंकाल तेरे से मिल रहा हूँ, क्योंकि तेरे से मिलने के लिए मुझे अन्दर जाना पड़ता है, लेकिन तेरी मानने के

शेष भाग पृष्ठ संख्या १८ पर...

संस्था समाचार

जैसा की सर्वविदित है ऋषि उद्यान में बरसों से दोनों समय यज्ञ, सत्संग होता रहता है। प्रातःकाल यज्ञ ब्रह्मचारी सुभाष सायं यज्ञ ब्रह्मचारी आकाश करा रहे हैं। प्रातः यज्ञ के बाद प्रतिदिन प्रवचन होते हैं।

प्रवचन के क्रम में आचार्य कर्मवीर ने **वित्तं बन्धुर्वयः कर्म विद्या भवति** पञ्चमी मनुस्मृति की इस श्लोक की व्याख्या करते हुए बताया कि वित्तम् अर्थात् धन- जिसके पास धन है उसका सम्मान होता है। व्यक्ति के पास धन होने मात्र उसका सम्मान नहीं होता। जब उस धन का प्रयोग धार्मिक कार्यों में, लोगों के उपकार में लगाता है तब उसका सम्मान होता है। इतिहास में महाराणा प्रताप का सहयोग करने के लिए भामाशाह का नाम प्रसिद्ध है। दूसरा उदाहरण स्वामी श्रद्धानन्द जब शुद्धि का कार्य कर रहे थे। मलकाना आगरा के क्षेत्र में बहुत सारे लोगों को शुद्ध करना था। उनमें शुद्धि होने वाले में जो नेता था। उसके मन में लोभ आया और उसने कहा कि यदि स्वामी जी २०,००० देंगे तो हम लोग अपना मत परिवर्तन करेंगे। यह १९१७-१८ की बात है। उस समय २०,००० की कीमत बहुत अधिक थी। तब स्वामी श्रद्धानन्द ने बिरला परिवार श्री जुगलकिशोर बिरला को तैयार किया। उन्होंने कहा कि आप चिन्ता ना करें २०,००० क्या २०,००,००० लगे तो भी मैं दूंगा। इस तरह वह शुद्धि कार्यक्रम सफल हुआ।

ऋषि उद्यान में अतिथियों का आना-जाना निरन्तर होता रहता है। इसी क्रम में अमेरिका से पधारी हुई डॉ. निकोले बिससेसार ने आंग्ल भाषा में बताया कि यज्ञ अर्थात् देने का विचार, जीवन में प्रेम प्रकाशित करें। स्वयं खुश रहे हैं। दूसरों को खुश रखने का प्रयास करें। एक-दूसरे का आदर सम्मान करें। आपके तथा वहाँ के आचार्य श्री सतीशप्रकाश के सहयोग से एक गली का नाम ही महर्षि दयानन्द गली रखा गया है। आप वहाँ के लोगों को आर्यसमाज की शिक्षा देते हैं। छोटे बच्चों को संगीत सिखाते हैं। कार्यक्रम का प्रसारण सप्ताह में १ दिन २३ देशों में टेलीकॉस्ट होता है। दो गुरुकुल की स्थापना की गई है। आपने एक भजन भी गाया। आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद। आपको यहाँ आकर बहुत ही अच्छा लगा तथा आपको यहाँ से ज्ञानवर्धक बातें सीखने को मिली। आप इसे परोपकारी सभा के यूट्यूब चैनल पर सुन सकते हैं।

आचार्य शक्तिनन्दन ने वैदिक गृहस्थ के विषय में बताया कि गृहस्थाश्रम तीनों आश्रमों का आधार है। जितनी गृहस्थ में सहनशक्ति सीखते हैं अन्य आश्रमों में नहीं। वानप्रस्थ और संन्यास की भूमिका भी गृहस्थ में ही बनती है। गृहस्थ में ही एक दूसरे को समझना होता है। एक-दूसरे के गुणों के साथ-साथ एक दूसरे के दोषों को भी जानते हैं। एक-दूसरे को क्षमा करते हुए सफलता की ओर बढ़ते हैं। जैसे दो नदियों का पानी मिला दिया जाए तो दोनों को अलग नहीं कर सकते वैसे ही पति-पत्नी का हृदय एक समान हो। पानी शीतलता का प्रतीक है। ऐसे ही दोनों शान्तचित्त के साथ रहें। तभी वह एक-दूसरे को क्षमा कर पाएंगे। एक-दूसरे के विचार समान हो। जैसे प्राण वायु के बिना हम जी नहीं सकते। वैसे ही कभी भी पति-पत्नी वियोग को प्राप्त ना हो। पूरी आयु तक जिए। पुत्र पौत्रों आदि के साथ अपने घर में आनन्द से रहे। कुछ लोग गृहस्थ के दुःखों से छोड़कर आश्रम में आ जाते हैं। अन्दर वैराग्य नहीं है तो वह जीवन में उतने सफल नहीं हो पाते। जिनका गृहस्थ आश्रम ठीक नहीं है उनका वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम भी ठीक नहीं हो सकता।

आचार्य रणजीत जी ने महाभाष्य के **दृष्टस्य ही दोषस्य सुकरःपरिहारः** इस वाक्य के आधार पर बताया कि जब हम अपने जीवन में दोषों को जान लेते हैं, समझ

लेते हैं। तब उसे हटाना सरल हो जाता है। जो दोष नहीं जानते हैं उसे हटाना कठिन होगा। जैसे कोई छात्र उच्चारण में गलत षकार का उच्चारण करता हो और आचार्य उसे बता देता है तो वह दोष दूर कर लेता है। इसलिए दोषों का पता होना बहुत जरूरी है। यदि गन्दगी का पता होगा तब हम उसे साफ करेंगे। इसी तरह से जब हमें अपने दुर्गुणों का पता होगा तो हम उन दुर्गुणों को दूर कर सकते हैं। इसके लिए हम सतत् जागरूक रहें। अपने दोषों को पहचानने का प्रयत्न करते रहे और दोष समझ में आने पर उसे हटाने के लिए सतत् पुरुषार्थ करते रहे। इस तरह से हमारे जीवन में दोष कम होता चला जाएगा।

आचार्य विद्यानन्द ने कठोपनिषद् के आधार पर नचिकेता यम के संवाद को बताते हुए बताया कि जब यमराज ने उन्हें तीन वर लेने के लिए कहा तो प्रथम वर उन्होंने मांगा कि जैसे मेरे पिता क्रोध रहित शान्त चित्त थे वैसे ही जब मैं जाऊं तो वह शान्त चित्त मिले। वैसे ही मुझसे प्रेमपूर्वक बात करें?। यमराज ने कहा तथास्तु। दूसरे वर के रूप में श्रद्धावान् होकर स्वर्गसाधक अग्नि की बात पूछी जहाँ ना कोई भय है ना बुढ़ापा है ना भूख-प्यास है ना मृत्यु है ना शोक है। आनन्द ही आनन्द है। वह बाह्य अग्नि नहीं है। हृदयरूपी गुहा अर्थात् बुद्धि रूपी गुफा में स्थित है। चार आश्रम है और तीन सन्धि है। ब्रह्मचर्य और गृहस्थ के बीच सन्धि, गृहस्थ और वानप्रस्थ के बीच सन्धि, वानप्रस्थ और संन्यास के बीच सन्धि। जो इन सन्धि काल को पार कर जाता है। जैसे लोक में जो अग्नि होती है। उसके लिए जितनी ईंट की आवश्यकता होती है। उतने ईंटों की वेदी बनाई जाती है। अग्नि हर वस्तु में विद्यमान है पर घर्षण से हम उसे प्रकट करते हैं। ऐसे ही इस बुद्धि रूपी गुहा में संकल्प विचार रुपी अग्नि को जो जला लेता है। प्रेरक विचार सुनकर समझ लेता है। वह सभी दु:खों से से ऊपर उठ जाता है। उस अग्नि को जलाना और हमेशा जलाए रखना होगा। वह संकल्प विचारों की अग्नि हमारे है। इस बात को जैसा यह उपदेश किया वैसा ही नचिकेता ने उन्हें सुना दिया तब यमाचार्य जी प्रसन्न हो गए और उन्होंने नचिकेता के नाम से उस अग्नि का नाम ही त्रिनाचिकेत अग्नि रख दिया।

सभा मन्त्री मुनि सत्यजित् ने ब्रह्मचारियों की शंकाओं का समाधान करते हुए बताया कि आर्यसमाज में संगठन का अभाव है। ऐसा लोग कहते हैं। हमारी संख्या कम है। अन्य मतवालों की संख्या अधिक है। वह कहीं झगड़ा होने पर तुरन्त इकट्ठा होकर सहयोग के लिए आ जाते हैं। पूरे विश्व में ईसाइयों और मुसलमानों की संख्या अधिक है। वैदिक अनुयायियों की संख्या कम है। यह एक चिन्ता का विषय है।

मुसलमानों की संख्या सबसे अधिक है पर मुसलमानों में ही शिया सुन्नी के झगड़े व अन्य जातिगत भेद बहुत ही अधिक हैं। सब मुसलमान बराबर नहीं है। वे आपस में ही संघर्ष करते हैं और मस्जिदों में बम फोड़ते हैं। वह एक-दूसरे को जिन्दा देखना भी नहीं चाहते। हमें बाहर से लगता है कि वह एक हैं। विदेशों में ईसाइयों के चर्च बेचे जा रहे हैं। ईसाई नव युवा पीढ़ी कम होती जा रही है। वैदिक धर्मी वे जो लोग वेदों को मानते हैं। वैदिक ग्रन्थों को मानते हैं। वह सभी वैदिक धर्मी है। केवल आर्यसमाजी ही नहीं। सज्जन, समझदार पढ़े-लिखे लोग अधिक संगठित नहीं होते। दुर्जन, अनपढ़ लोग अधिक संगठित होते हैं, क्योंकि वे लोभ और भय के कारण इकट्ठा होते हैं। वैज्ञानिकों के संगठन बहुत छोटे होते हैं पर वे पूरी दुनिया पर राज करते हैं। संगठन किस लिए होना चाहिए? अच्छे कार्यों को करने के लिए तो आर्यसमाज का जो सिद्धान्त है चाहे सभी के लिए शिक्षा, गोशाला, स्त्री शिक्षा, बाल विवाह ना होना, अस्पृश्यता आदि पर पहले की अपेक्षा बहुत ही काम हुआ है। अन्य संगठन व सरकार इन कार्यों को कर रही है।

भजन के क्रम में पण्डित भूपेन्द्र जी ने- प्रभु को भूलकर इंसान गाफिल होता जाता है। दूसरा सदियों से

जीव भटकता पर चैन कभी ना पाया

वैवाहिक वर्षगांठ- श्री सूर्यप्रकाश व श्रीमती सीमा की वैवाहिक वर्षगांठ ऋषि उद्यान में प्रातःकाल यज्ञ कर विवाह वर्षगांठ की आहूति दे कर मनाई गई। आचार्य शक्तिनन्दन आदि ने आशीर्वाद प्रदान किया। श्री सवाई के दौहित्र श्री भानुप्रताप और वैभवप्रताप का जन्मदिवस सपरिवार मनाया गया। आचार्य कर्मवीर आदि ने आशीर्वाद दिया।

श्री कृष्णगोपाल राठी ने भी अपना वैवाहिक वर्षगांठ, वैवाहिक वर्षगांठ की आहूति देकर मनाया।

श्री नाथूलाल त्रिवेदी ने भी अपना जन्मदिवस व वैवाहिक वर्षगांठ सायंकाल यज्ञ करके मनाया। स्वामी संस्कृतायन आदि ने आशीर्वाद प्रदान किया।

पृष्ठ संख्या १५ का शेष भाग...

लिए मुझे अन्दर जाने की आवश्यकता नहीं है। मैं बाहर का व्यवहार करते हुए, तेरी मान्यता का पालन कर सकता हूँ। इसलिए मेरी उपासना में जो ईश्वर का प्रणिधान है, ईश्वर के प्रति समर्पण है वो मेरे जीवन के प्रत्येक क्षण में परिलक्षित होता है, हर जगह दिखाई देता है, मालूम पड़ता है। इसलिए जो व्यक्ति उपासना करता है वो उपासना के कारण इस संसार में भी सुखी होता है और संसार के बाहर भी सुखी होता है। वह स्वयं भी सुखी होता है और दूसरों को भी सुखी करता है। इस तरह हमारी जो उपासना है, उसमें व्यवहार काल हमारे यम-नियमों का काल है, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा का जो काल है, वो हमारी अवधि का, जाने की यात्रा का काल है और जब ध्यान व समाधि की ओर चले जाते हैं और इन तीनों को एकत्रित कर लेते हैं तो इस एकत्रित करने में जो हमारी उपासना है वो परमेश्वर को अपने अन्दर पाने की होती है। तो इस तरह से इस मन्त्र में बड़े विस्तार के साथ उन संकेतों का वर्णन हो सकता है अर्थात् जो बहुत विस्तृत बात है वो बहुत थोड़े शब्दों में यहाँ कही गयी है।

सार्वभौम सिद्धान्त वेद के...

- डॉ. रामवीर

सार्वभौम सिद्धान्त वेद के
मनुजमात्र के लिए लाभकर,
अन्य ग्रन्थ भी पढ़ कर देखें
भली भांति हम ने विचार कर।

साम्प्रदायिकता की जड़ में हैं
बाइबल और कुरान के बोल,
विश्व अशान्ति में इन दोनों का
सब से बड़ा रहा है रोल।

इन की तर्कहीन बातें ही
अपना भेद रही हैं खोल,
आज तलक भी पढ़ा रहे हैं
बच्चों धरती नहीं है गोल।

जिस भूमि औ जिस युग में यह
रची गई है होली बाइबल,
उस भूभाग व उसी काल की
बातें इसमें हुई हैं शामिल।

ऐसी ही संकीर्णताओं से
भरा पड़ा कुरआन मजीद,
बाइबल औ कुरआन के द्वारा
हुई जगत् की मिट्टी पलीद ।

बाइबल प्रेरित क्रूसेडों से
भरा है यूरोप का इतिहास,
और उसी की पुनरावृत्ति
को कहते इस्लामी जिहाद।

इस्लामी चिन्तन के मुताबिक
अर्थहीन है जीवन लौकिक ,
मर्गे कयामत जो शुरु होता
वही है इन के लिए वास्तविक।

हूरों वाली जन्नत जिन के
जीवन का बस एक ही ध्येय,
विश्व शान्ति और मानवता की
बातें उन के लिए हैं हेय।

८६, सैक्टर -४६, फरीदाबाद (हरि.) चलभाष ९९११२६८१८६

वैदिक मनोविज्ञान : मनोविज्ञान का स्वरूप

डॉ. कपिलदेव द्विवेदी

स्मृतिशेष डॉ. द्विवेदी आर्यजगत् के यशस्वी विद्वान् थे। आपने अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। लेख की उपयोगिता के कारण इसे साभार पुनः प्रकाशित किया जा रहा है- सम्पादक।

वर्तमान समय में मनोविज्ञान एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण विज्ञान है। इसे मनोविज्ञान या Psycology कहा जाता है। Psycology शब्द Psycho (ग्रीक Psyche spirit, Mind, आत्मा, मन) और Logy (ग्रीक Logia, विज्ञान) शब्दों के मेल से बना है। इसका अर्थ है। मन का विज्ञान या मन की विभिन्न स्थितियों का विज्ञान। मन के समस्त क्रियाकलाप का वैज्ञानिक अध्ययन इसका विषय है। मनोविज्ञान का सम्बन्ध दर्शन और विज्ञान दोनों से हैं। मन और मन की विविध चेष्टाएं दर्शन का विषय है; अतः यह दर्शन है। मन के विविध क्रियाकलापों का यत्रों के द्वारा सूक्ष्मतम निरीक्षण और उनका परीक्षण, उन परीक्षणों से विविध निष्कर्ष निकालना आदि विज्ञान का विषय है, अतः मनोविज्ञान दर्शन और विज्ञान दोनों से सम्बद्ध है।

मनोविज्ञान के अन्तर्गत संक्षेप में ये विषय लिये जाते हैं- स्नायु-मण्डल (Norvous System), संवेदन (Sen- sation), प्रत्यक्षीकरण (Perception), अवधान या ध्यान (Attention), सीखना (Learning) स्मरण (Remembering), विस्मरण, (Forgetting), कल्पना (imagination), चिन्तन (Thinking) भाव या अनुभूति (Feeling) संवेग (Emotion) प्रेरणा (Motivation), चेतना (Consciousness), स्वप्न (Dream), बुद्धि (Intelligence), योग्यताएं (Aptitude), व्यक्तित्व (Personality), वंशानुक्रम एवं वातावरण (Heredity and Enviromn- ent), विफलता (Frustraion) आदि।

आधुनिक मनोविज्ञान में ज्ञान और विज्ञान के विविध क्षेत्रों को लेकर इसकी अनेक शाखाएं हो गई हैं। जैसे- बाल मनोविज्ञान, शिक्षा-मनोविज्ञान, समाज-मनोविज्ञान, उद्योग मनोविज्ञान, न्याय या विधि-मनोविज्ञान, वाणिज्य-मनोविज्ञान, अपराध-मनोविज्ञान, परा मनोविज्ञान, स्नायु-मनोविज्ञान (Neuro-Psycology)

भारतीय चिन्तन की धारा

वेदों मनोविज्ञान की जो रूपरेखा प्रस्तुत की गई है, उसका कुछ विकसित रूप ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों में प्राप्त होता है। जिस प्रकार वर्तमान समय में मनोविज्ञान का विश्लेषणात्मक न हो रहा है, उतना विस्तृत और व्यापक अध्ययन प्राचीन समय में प्राप्त नहीं होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों और उपनिषदों में मन का शास्त्रीय रूप प्रस्तुत किया गया है। इनमें मन के गुण, धर्म, स्वरूप और कार्यों की समीक्षा है। इनका ही यहाँ पर संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया किया जा रहा है।

ब्राह्मण ग्रन्थों में मन को ब्रह्म कहा है।[१] यह यह सर्वशक्तिमान् है और परमात्मा का स्वरूप है, अतः ब्रह्म है। मन सृष्टि का कर्त्ता है, अतः उसे ब्रह्मा कहा गया है।[२] इसी कर्तृत्व के आधार पर उसे प्रजापति या सृष्टि-निर्माता बताया है।[३] मन की कल्पना से ही यह सारा संसार है। मन जैसा चाहता है, वैसा होता है। अतः उसे सर्वम् (सब कुछ) कहा है।[४] मन की शक्ति अनन्त है, अतः उसे अनन्त और अपरिमित कहा गया है।[५] मन की दिव्य शक्तियों के कारण उसे देव बताया गया है।[६] मन में प्रेरणा शक्ति है, अतः उसे अग्नि कहा गया है।[७] मन

कल्पनाओं और शक्तियों का अथाह भण्डार है, अत: उसे समुद्र बताया गया है[८], मन विचारों का भण्डार है, महानदी है और उसका प्रकाशन वाणी के द्वारा होता है अत: वाणी को मन की नहर कहा है।[९]

मन प्रजापति या ब्रह्म का विशिष्ट शरीर है।[१०] मन का ही काम है कि यह नाना प्रकार की सृष्टि रचना करता है। मन और वाणी का असाधारण सम्बन्ध है। जो मन सोचता है; वाणी उसे प्रकट करती है।[११] मन में ही आत्मा (=चेतना की प्रतिष्ठा है, अर्थात् मन हो आत्मा के सब काम करता है।[१२] मन प्राणों का अधिपति है। मन जिस प्रकार प्राणों को आदेश देता है, उसी प्रकार पाप है।[१३] इसका अभिप्राय यह है कि मन के आदेशानुसार स्नायु मण्डल एवं रक्तप्रवाह का संचालन होता है। समस्त प्रत्यक्षीकरण का काम मन करता है, मन ही देखता है और मन ही सुनता है।[१४]

शतपथ ब्राह्मण में बहुत महत्त्वपूर्ण बात कही गयी है कि ये सभी तत्त्व मन के ही विभिन्न रूप है- काम (इच्छा), संकल्प (विचार) चिकित्सा (उहापोह, सन्देह), श्रद्धा, अश्रद्धा, धृति (धैर्य), अधुति (अधीरता), ह्री (लज्जा) धी (ज्ञान), भी (भय, डर, आतंक)।[१५]

इसी प्रकार उपनिषदों में मन के विविध गुण-धर्मों का वर्णन किया गया है। मन महान् शक्ति है; उसका सब पर अधिकार है, वह परमेश्वर रूप है, अत: उसे सम्राट् और परब्रह्म कहा गया है।[१६] मन प्रकाशक और ज्योतिरूप है। वही ज्ञान का दाता है, अत: उसे ज्योति कहा गया है।[१७]

मन चेतना रूप (Consciousness) है। मानव का निर्माण चेतना करती है।

जैसी मन की प्रवृत्ति होती है, वैसा ही मनुष्य का स्वभाव और व्यक्तित्व विकसित होता है। अत: उपनिषद् का कथन है कि मनुष्य मनोमय है।[१८] मनुष्य के मन का अध्ययन उसके व्यक्तित्व का अध्ययन है। उसकी इच्छाएँ, उनके संकल्प, उसके व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं। मत: उपनिषद् ने पुरुष को काममय या इच्छास्वरूप कहा है।[१९]

मन का स्वरूप चेतना है। अत: मन को शरीर में आत्मा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है। मन में कर्तृत्व और निर्मातृत्व है, अत: वह आत्मरूप है। प्राणमय शरीर से मनोमय शरीर सूक्ष्म है, अत: मनोमय शरीर को सूक्ष्म आत्मा बताया गया है।[२१]

इस समस्त सृष्टि रूप यज्ञ में मन ही ब्रह्मा है। वही इस सृष्टि चक्र का निर्देशक है।[२२] मन की शक्तियाँ अनन्त है, अत: उसे अनन्त कहा गया है।[२३] परमात्मा की प्राप्ति का साधन मन है, मन ही परमात्मा का साक्षात्कार करता है।[२४]

मन के गुण

अथर्ववेद के एक मन्त्र में सूत्र रूप में मनोविज्ञान के सभी विषयों का उल्लेख है।[२५] इसमें 'मनसे' के द्वारा संवेदन। (Sensation) और प्रेरणा (Motivation) का ग्रहण है 'चेतसे' के द्वारा चेतन। (Consciousness) और चिन्तन (Thinking) अभिप्रेत है। 'धिये' के द्वारा ध्यान या अवधान (Attention) अभिप्रेत है। 'आकूतये' के द्वारा अनुभूति (Feeling) और संवेग (Emotion) का ग्रहण है। 'चित्तये' के द्वारा चित्त के धर्म स्मरण (Remembering) और तद्भाव रूप में विस्मरण (Forgetting) का ग्रहण 'मर्त्ये' के द्वारा बुद्धि (Intelligence) अभिप्रेत है। 'श्रुताय' के द्वारा श्रवण, पठन एवं शिक्षण (Learning) का ग्रहण है। 'चक्षसे' के द्वारा चक्षु-कार्य, दर्शन या प्रत्यक्षीकरण (Perception) अभिप्रेत है।

यजुर्वेद ३४वें अध्याय में 'तन्मे मन: शिवसंकल्पमस्तु' वाले ६ मन्त्रों में मन के सभी महत्त्वपूर्ण गुणों का उल्लेख है। इसमें मन को अति दूरगामी बताते हुए उसकी तीव्रता का उल्लेख किया गया है। मन न केवल जाग्रत अवस्था में ही इधर-उधर दूर तक जाता

है, अपितु स्वप्न (Dream) अवस्था में भी उसी तरह दूर तक जाता है। इसको ज्योतियों की ज्योति अर्थात् प्रकाश का प्रकाशक कहा गया है। यह प्रकाश है, जो ज्ञान और विज्ञान के सभी तत्त्वों को प्रकाशित करता है। यह चेतना (Consciousness) का आधार है।[२६]

इस मन को मानव-हृदय में रहनेवाली अमर ज्योति और अपूर्व यक्ष अर्थात् आदरणीय तत्त्व माना गया है।[२७] मन आत्मा का प्रतिनिधि है, अत: आत्म तत्त्व के तुल्य वह अमर है और प्रकाशरूप है। मन की सत्ता से सब काम होते हैं, अत: उसे अनुपम यक्ष कहा गया है। मन हो प्रेरणा (Motivation) का स्रोत है। इसकी प्रेरणा से सारे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के कार्य होते हैं।[२८]

एक मन्त्र में मन के तीन महत्त्वपूर्ण गुणों का उल्लेख हुआ है। ये हैं- प्रज्ञान (Cognitions) चेतस् (Recollection) और धृति (Retention)। साथ ही यह भी कहा गया है कि यह एक ज्योति है। इसके बिना संसार का कोई काम नहीं होता है।[२९]

मन वर्तमान, भूत, और भविष्य तीनों कालों में व्याप्त है। तीनों काल मन की सीमा में आते हैं। मन के द्वारा तीनों कालों का दर्शन होता है। कोई ऐसा काल नहीं है, जिसके विषय में मन चिन्तन और मनन न कर सकता हो।[३०] मन में ही संसार का सारा ज्ञान और बुद्धि (Intelligence) निहित है। इसमें ही चित्त अर्थात् प्रज्ञा शक्ति (Cognitions Faculty) का समावेश है।[३१]

मन एक योग्य सारथि है। यह इन्द्रिय रूपी घोड़ों को ठीक ढंग से नियन्त्रित करता है। इसका निवास स्थान हृदय है। इसकी गति अद्वितीय है और इसमें असाधारण कार्यक्षमता है।[३२]

अनेक मन्त्रों में मन की तीव्र गति का उल्लेख है। मन को वायु के तुल्य तीव्रतम गतिवाला बताया गया है।[३३] मन की गति न केवल पृथ्वी तक ही है, अपितु यह अन्तरिक्ष और द्युलोक तक जाता है।[३४] यह संसार भर में घूमता है कभी भी शान्ति से नहीं बैठता है।[३५] मन चंचल है, अत: विशिष्ट कार्य के लिए उसको रोककर नियन्त्रित करना आवश्यक है।[३६] गीता में मन के निग्रह के लिए अभ्यास और वैराग्य को साधन बताया गया है।

अभ्यासेन तु कौन्तेय वैराग्येण च गृह्यते।

(गीता ६.३५)

मन के कतिपय अन्य गुणों का भी उल्लेख मिलता है। संसार में व्याप्त शाश्वत नियमों को ऋत कहते हैं। इनकी विभिन्न शाखाएं हैं, इनको ऋत के तन्तु या सूत्र कहा जाता है। इन सूक्ष्म तत्त्वों का ज्ञान मन के द्वारा होता है।[३७] मस्तिष्क में विद्यमान स्नायु-तन्तुओं को भी ऋत के तन्तु कहा जाता है। यजुर्वेद का कथन है कि ये ऋत तन्तु या ज्ञान-तन्तु चारों और फैले हुए हैं। ऋषि या सूक्ष्मदर्शी ही इन तन्तुओं को देख पाते हैं। जो इनका साक्षात्कार कर लेता है, वह तत्त्वदर्शी हो जाता है। मस्तिष्क में विद्यमान ये तन्तु या सूत्र ज्ञान के साधन है, अत: इन्हें ज्ञान तन्तु भी कहा जाता है।

ऋतस्य तन्तुं विततं विचृत्य,
तदपश्यत् तदभवत् तदासीत्।। यजु. ३२.१२

मन त्रिकालदर्शी है। वर्तमान, भूत और भविष्य सर्वत्र इसकी गति है।[३८] मन ही वाक्तत्त्व में संसार का सारा ज्ञान निहित है, अत: मन ज्ञान का धारक और प्रेरक है।[३९] मन को हृदय का निर्देशक कहा गया है, अत: मन हृदय को आदेश करता है।[४०]

मन का कार्य चिन्तन और संकल्प- विकल्प (Tninking) है। ऊहापोह, तर्क-वितर्क, गुण-दोष का विचार और विविध कल्पनाएं (Imagination) मन का विषय है। अत: कहा गया है कि मन से संकल्प करता है।[४१] यजुर्वेद में भी मन के गुण काम (Desire) और आकूति (Intention, will) बताए गए हैं।[४२]

ऋग्वेद मन के दो गुणों का उल्लेख है। मन, ज्ञान और कर्म का साधन है। अत: उसे दक्ष अर्थात् ज्ञानयुक्त और ऋतु अर्थात् क्रियाशील कहा गया है।[४३] मन ज्ञेय

वस्तुओं को ग्रहण करता है, अतः ज्ञान का साधन है। वह उस ज्ञान के आधार पर तदनुकूल प्रेरणा देता है और कार्य करता है। अतः वह प्रेरणा (Motivations) का स्रोत है। एक मन्त्र में बुद्धि (Intelligence) का कार्य बताया गया है कि वह मन को चेतना देती है। मन को प्रेरणा देना, उसे कार्यों में नियुक्त करना तथा ध्यान और एकाग्रता की क्षमता प्रदान करना बुद्धि का कार्य है।[४४]

अथर्ववेद में एक मंत्र में प्रत्यक्षीकरण (Perception) की प्रक्रिया का वर्णन किया गया है। संवेदनाओं (Sensations) को ५ ज्ञानेन्द्रियाँ ग्रहण करती हैं और मन के द्वारा इनका प्रत्यक्षीकरण होता है। अतः ५ ज्ञानेन्द्रियाँ और मन में ६ मिलकर प्रत्यक्षीकरण का कार्य पूरा करते हैं।[४५]

मन की विशेषताएं

मन की अनन्त विशेषताएं हैं। संसार का ऐसा कोई सुख-दुःख, हानि-लाभ, ज्ञान-विज्ञान, उद्योग, संघर्ष, द्वन्द्व, चिन्तन, कल्पना, अनुभूति और अभीष्ट लाभ नहीं है, जो मन के कार्यक्षेत्र मे न आता हो। मन को सहस्र किरण या असंख्य शक्ति कहा जाए तो अत्युक्ति नहीं है। मन द्यावा पृथिवी, लोक-परलोक, वर्तमान भूत और भविष्य सभी को अपनी परिधि में रखता है। अतः वेदों में इसकी अनन्त शक्तियों का उल्लेख है। अथर्व वेद का कथन है कि मन वशीकरणका साधन है। मन दूसरे के मन को आकृष्ट करता है, उसे वश में कर लेता है और इच्छानुसार उसे यथा स्थान प्रवृत्त करता है।[४६] मेस्मरिज्म और हिप्नोटिज्म (Mesmerism & Hypnotism) मन के द्वारा वशीकरण के सफल प्रयोग हैं। साधना और तप के द्वारा मन की चुम्बकीय शक्ति को विकसित किया जाता है।

शुद्ध एवं पवित्र मन की विशेषता बताई गई है कि इसके द्वारा तेजस्विता, समृद्धि और शारीरिक नीरोगता आदि प्राप्त की जाती है।[४७] शारीरिक नीरोगता का साधन मानस-चिकित्सा है। मन की शुद्धि शरीर के मल और विक्षेपों को दूर करती है।

मन संजीवनी शक्ति है। यह निर्जीव को सजीव और अक्षम को सक्षम बना देती है। इसमें संजीवनी शक्ति है। यह चेतनता प्रदान करता है और कर्म में प्रवृत्ति कराता है। इस प्रकार मन चेतना और प्रेरणा का मूल है।[४८] मन की शक्तियों का वर्णन करते हुए कहा गया है कि मनोबल से मृत्यु को वश में किया जा सकता है। मरणासन्न को मृत्यु से बचाया जा सकता है। जिस प्रकार मोटी रस्सी से जूए को कसा जाता है, उसी प्रकार मन के द्वारा मृत्यु को भी कसकर वश में लाया जा सकता है।[४९]

मन की पवित्रता, विचारों की शुद्धि और तपस्या को मुक्ति का साधन माना गया है।[५०] मन यदि शुद्ध है तो जीवन-मरण के बन्धन से मुक्त हो जाता है। यदि वह अशुद्ध है तो मनुष्य सदा बन्धन से ग्रस्त रहता है। अतएव कहा गया है कि मन ही मनुष्य के बन्धन और मोक्ष का कारण है।

मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः।

शाट्यायनीय उप. १

विचारों की शुद्धता का फल बताया गया है कि इससे सारे मनोरथ सफल होते हैं। साथ ही यह भी बताया गया है कि विचारों की शुद्धि का एक मात्र साधन है- पापों से निवृत्ति, बुराइयों से बचना या कुकर्मों को छोड़ना[५१] मन की पवित्रता से पापों पर विजय प्राप्त की जाती है। मन की पवित्रता सभी प्रकार के युद्धों में विजय प्राप्ति का अमोघ साधन है। पापों को वृत्र कहा गया है। शुभ विचारों से वृत्र का वध किया जाता है।[५२]

जैसा मनुष्य का हृदय होता है, उसी प्रकार उसकी बुद्धि होती है। विचारों और भावनाओं की शुद्धि बुद्धि के परिष्कार का साधन है। अतः कहा गया है कि शुद्धि हृदय से बुद्धि को परिष्कृत करता हूँ।[५३०]

अनेक मन्त्रों में मनोबल या इच्छा शक्ति (Will-Power) का महत्त्व वर्णन किया गया है। मनोबल

वह शक्ति है, जिसे कोई दबा नहीं सकता है। यह अघर्षणीय है। मनोबल, पहाड़ से भी अधिक शक्तिशाली है। दृढ़ निश्चय को पहाड़ भी नहीं रोक सकते हैं।[५४] मनोबल का यह महत्त्व है कि मनुष्य जीवन में कभी हारना नहीं जानता। सदा विजय-लाभ करता है। वह मृत्य से भी हार नहीं मानता। मृत्यु को वश में रखता है।[५५]

मनोबल वह शक्ति है, जिससे विश्व विजय किया जाता है। मंत्र का कथन है कि मनोबल से द्युलोक और पृथ्वी को जीतता हूँ।[५६] मनोबल से युक्त व्यक्ति को चारों दिशाएं प्रणाम करती है। सारी पृथ्वी उसके लिए सुख समृद्धि देती है।[५७] मनोबल को काम या कामना शब्द से सम्बोधित करते हुए कहा गया है कि वह अपनी सामर्थ्य से प्रतिष्ठित है। उसके लिए किसी दूसरे सहायक की आवश्यकता नहीं है। वह युद्धों में विजयी बनाता है, ओज देता है और तेजोमय है।[५८]

मनोबलका उपयोग जनहित या जनकल्याण के लिए भी होता है। जनहित के लिए मंत्र में नाराशंस शब्द का प्रयोग है। जनहितकारी मन का आह्वान किया गया है।[५९] मनोबल एवं तीव्र संकल्प का फल बताया गया है कि मनुष्य जो कुछ चाहता है, वह उसे प्राप्त हो जाता है। उसके मनोरथ सिद्ध होते हैं।[६०] मन अभीष्ट सिद्धि में रथ का काम करता है और प्रार्थित वस्तु लाकर उपस्थित करता है, अत: उसे रथ की उपमा दी गई है।[६१]

मनोबल से असम्भव कार्यों को भी सम्भव बनाया जा सकता है। मनोबल शक्ति का स्रोत है।[६२] मनोबल मनुष्य को अजेय बना देता है। दो चार नहीं, सैकड़ों शत्रु उसे परास्त नहीं कर सकते हैं। वह शत्रुओं को खलिहान में धान की फली की तरह रोंद देता है।[६३] मनोबल से पापी और आक्रामक को निष्प्रभाव बना दिया जाता है।[६४]

इच्छा शक्ति के विविध उपयोग

वेदों में इच्छाशक्ति (will power) के लिए आकूति और काम शब्द मिलते हैं। इच्छाशक्ति का अनेक प्रकार से महत्त्व बताया गया है । उसको अनेक रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

इच्छा शक्ति सौभाग्य की देवी है। यह मन में रहती है। यह विचार और चिन्तन की जननी है। इसको आगे रखकर सभी महत्त्वपूर्ण कार्य किए जाते हैं।[६५] यह इच्छा शक्ति ऐश्वर्य का स्रोत है। यही मनुष्यों को सफलता दिलाकर समृद्ध करती हैं।[६६] इच्छा शक्ति को मानवीय उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अध्यक्ष या संचालक बताया गया है। यही मानव को प्रेरणा देती है; शत्रुओं को नष्ट करती है और सभी को सहयोगी बनाती है। जहाँ प्रबल इच्छा शक्ति होती है, वहाँ सभी सहायक होने लगते हैं।[६७] इच्छा शक्ति को अभेद्य कवच गया है। इसका संरक्षण सर्वोकृष्ट है। यह तीन प्रकार से रक्षा करती है। अधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक तीनों प्रकार की विपत्तियों से यह मानव की रक्षा करती है। इसको 'ब्रह्मवर्म' अर्थात् ज्ञान-कवच या आत्मबलरूपी कवच कहा गया है। इसके द्वारा सभी विपत्तियों, कष्टों और शत्रुओं को जीता जाता है।[६८]

इच्छा शक्ति के वश में सभी देवगण है। सभी देवों और देवताओं की उत्पत्ति इच्छाशक्ति से हुई है। यह उनका मार्गदर्शन करती है। शरीर के अन्दर विद्यमान इन्द्रियरूपी देवता और बाह्य जगत् में विद्यमान पृथिवी आदि देवता सब इच्छा शक्ति के नियन्त्रण में है।[६९]

यह कामनारूपी इच्छा शक्ति स्थावर जंगम और समुद्र आदि से भी महान् है। महत्ता में इसके समान कोई नहीं है।[७०] जो कार्य इच्छा शक्ति कर सकती है; वह कोई नहीं कर सकता, अत: यह सबसे महान् है। इस इच्छा शक्ति का आदि और अन्त नहीं है। इसे अग्नि, सूर्य, चन्द्रमा, वायु आदि कोई नहीं पा सकता है। अत: यह सबसे बढ़कर है।[७१] यही मानवमात्र की कामनाएं पूर्ण करती है और अभीष्ट की साधक है।[७२]

इच्छा शक्ति से ही जीवन में श्रेष्ठता आती है। इससे ही देवता श्रेष्ठ हुए। अतएव देवोंको 'काम ज्येष्ठा:'

कहा गया गया है।[७३] इच्छा शक्ति को कामधेनु कहा गया है। यह सभी कामनाओं को पूर्ण करती है, अत: कामधेनु है। इच्छा-शक्ति से विचार उद्‌बुद्ध होते हैं। विचारों की अभिव्यक्ति वाणी से होती है। अत: विराट वाक्तत्त्व को काम की पुत्री बताया गया है।[७४]

इच्छाशक्ति और उत्साह परस्पर सम्बद्ध है। अत: इनका एक मन्त्र में पति-पत्नी के रूप में वर्णन किया गया है। संकल्प विचार की पुत्री इच्छा है और उसका मन्यु (उत्साह) के साथ विवाह हुआ। संकल्प या विचारों से इच्छाशक्ति जन्म लेती है और वह उत्साह के साथ कार्य में प्रवृत्त होती है।[७५]

विचारों का प्रभाव

विचार (Thoughts) मानव को सदा प्रभावित करते रहते हैं। जीवन का निर्माण विचारों के अनुसार होता है। शुभ विचार उन्नति, विकास प्रगति और दीर्घायु के साधन हैं तथा अशुभ विचार रोग, शोक, दैन्य और अल्पायु के कारण है।[७६] शुभ विचार सदा समृद्धि का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ये अधृष्य, अप्रतिहत और उन्नतिकारक हैं। शुभ विचार देव-कृपा का फल है, अत: शुभ विचारों में देवों का निवास है। इसलिए मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि शुभ विचार सभी ओर से आवें।[७७] शुभ विचार पाप भावना नष्ट करते है। जीवन में विजय दिलाते हैं और वृत्ररूपी पाप को नष्ट करके आत्मशक्तियों को विजयी बनाते हैं।[७८]

विचारशक्ति में ऊर्जा है, गति है, शक्ति है और प्रभावकता है। विचार शक्ति का उद्‌बोधन, सम्प्रेषण और संक्रमण सभी कुछ हो सकता है। इसमें अजेयता है, आकर्षण शक्ति है और दुर्गुणों के निरोध की क्षमता है। इसके आधार पर ही जीवन में समरसता और विषमता आती है। अनेक मन्त्रों में इसका विस्तृत वर्णन मिलता है।

विचार शक्ति का सम्प्रेषण होता है। प्रेम आदि के विचार अपने प्रिय या प्रिया तक पहुँचाये जाते हैं।[७९] भक्त की कामनाओं को अभीष्ट देव सुनते हैं और पूरा करते हैं।[८०] विचारों का संक्रमण होता है । अपने हृदय के विचार दूसरे के हृदय में संक्रमित किये जाते हैं।[८१] विचारों में आकर्षण शक्ति है। दूसरे के इधर-उधर गए मन को लौटाकर लाया जा सकता है।[८२] विचारों की पवित्रता मनुष्य को अजेय बना देती है । दुर्जनों आदि के कटु प्रहार उस पर निष्प्रभाव हो जाते हैं।[८३]

विचार शुद्धि से काम आदि भावनाओं पर विजय प्राप्त की जाती है।[८४] विचार शुद्धि जीवन में समरसता लाती है। इससे शुभ-अशुभ सभी को समभाव से ग्रहण किया जाता है।[८५] विचार शुद्धि से पाप-प्रवृत्ति का नाश होता है, अत: परमात्मा का क्रोधरूपी बाण उस पर कभी नहीं पड़ता[८६] देवता पापी और पुण्यात्मा को जानते हैं। जहाँ शुभ विचार है, वहाँ देवों का निवास है।[८७] विचारों की शुद्धि से ही आत्माका साक्षात्कार किया जाता है।[८८] जब तक दुविचारों को नष्ट नहीं किया जाता, तब तक सुख का मार्ग प्रशस्त नहीं होता।[८९] जिस प्रकार शुभ विचारों का संक्रमण और सम्प्रेषण होता है। उसी प्रकार दुविचारों का भी सम्प्रेषण और संक्रमण होता है। अभिचार के कृत्यों में दुर्विचारों का सम्प्रेषण किया जाता है।[९०]

संकल्पशक्ति का महत्त्व

वेदों में संकल्पशक्ति का वर्णन काम शब्द के द्वारा हुआ है। संसार में सबसे पहले संकल्पशक्ति का आविर्भाव हुआ उससे ही सारी सृष्टि बनी।[९१] संकल्पशक्ति सबसे महान् है। यह द्यावापृथिवी से भी उत्कृष्ट है।[९२] संकल्पशक्ति मन का सार भाग है; अत: इसे मन का रेतस् या वीर्य कहा गया है।[९३] संकल्पशक्ति आग्नेय तत्त्व है, अत: इसे अग्नि कहा गया है।[९४] सभी प्रकार के यज्ञों से संकल्प शुद्धि को अधिक प्रभावशाली बताया गया है।[९५] संकल्पशुद्धि से कुस्वप्न यादि दोषों का निराकरण किया जाता है।[९६]

वेदों में मनोबल या मन: शक्ति को क्षीण करने वाले कुछ तत्त्वों का उल्लेख है। इनमें मुख्य हैं- पाप

भावना, ईर्ष्या, और काम-भावना। इनके निरोध से मनोबल पुष्ट होता है।[९७]

वेदोद्धारिणी, जुलाई-दिसम्बर, १९८७ से साभार

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१. मनो ब्रह्म। गोपथ, १.२.११

२. मनो ब्रह्मा। गोपथ १.२.११

३. मनो वै प्रजापतिः। तैत्ति. ३.७.१.२

४. मन एव सर्वम्। गोपथ, १.५.१५

५. अनन्त वै मनः शत. १४.६.११, मनो वा अपरिमितम्। कौशी. २६.३

६. मनो देव। गोपथ. १.२.११

७. मन एवाग्निः। शत. १०.१.२३

८. मना वै समुद्रः। शत. ७. ५.२.५२

९. तस्य (मनसः) एपा कुल्य यद् वाक्। जैमिनीय उप. ब्रा. १.५८.३

१०. अपूर्वा (प्रजापतेस्तन्:) तन्मनः। ऐत. ५.२५

११. यद् हि मनसोऽभियच्छति तद् वाचा वदति। तांड्य ब्रा. ११.१.३

१२. मनसि हि अयमात्मा प्रतिष्ठितः। शत. ६.७.१.२१

१३. मना वै प्राणानाम् अधिपतिः। शत. १४.३.२.३

१४. मनसा ह्येव पश्यति, मनसा शृणोति शत. १४.४.३.८

१५. कामः संकल्पो विचिकित्सा श्रद्धाऽश्रद्धा धृतिरधृतिः ह्रीः धीः भीः इत्येतत् सर्व मन एव। शत. १४.४.३.९

१६. मनो वै सम्राट् परमं ब्रह्म। वृहदा. उप. ४.१.६

१७. मनो ज्योतिः। बृहदा. ३.६.१०

१८. अयं पुरुषो मनोमयः। तैत्तिरीय १.६.१, बृहदा. ५.६.१

१९. अयं काममयः पुरुषः। बृहदा. १.४.११

२०. मन एवास्य आत्मा। बृहदा. १.४.१७

२१. अन्योऽन्तर आत्मा मनोमयः। तैति. २.३

२२. मनो वै यज्ञस्य ब्रह्म। बृहदा. ३.१.६

२३. अनन्त वै मनः। बृहदा. ३.१

२४. मनसैवेदमाप्तव्यम्। कठ. २.१.११

२५. मनसे चेतसे धिय आकूतय उत चित्तये। मत्यै श्रुताय चक्षसे विधेम हविषा वयम्।। अथर्व-६.४.१.१

२६. यजु. ३४.१

२७. यजु. ३४.२,३

२८. यजु. ३४.२

२९. यजु. ३४.३

३०. यजु. ३४.४

३१. यजु. ३४.५

३२. यजु. ३४.६

३३. यजु. ९.७

३४. ऋग. १०-५८.२

३५. ऋग. १.-५८.१०

३६. ऋ. ७.२५.१, तै. सं. १.७.१३

३७. अथर्व १३.३.१९

३८. ऋग. १०.५८-१२

३९. ऋग. १०.१७७.२

४०. ऋग. ८.१००.५

४१. अथर्व. १२.४.३१

४२. यजु. ३९.४

४३. ऋग. १०.२५.१

४४. ऋग ८.९५.५

४५. अथर्व. १९.९.५

४६. अथर्व ३.८.६, ६.९४.२

४७. यजु. २.२४; ८.१४; अथर्व. ६.५.३.३

४८. यजु. ३.५४

४९. ऋग. १०.६०.८, ऋग. १०.६.१०

५०. अथर्व. ६.१२२.४

५१. ऋग. १०.१२८.४; अथर्व ५.३.४

५२. ऋग. ८.१९.२०, यजु. १५.३९.४०, साम. १५६०

५३. ऋग. १०.११९.५

५४. ऋग. १०.२७.५

५५. ऋग. १०.४८.५

५६. ऋग. १०.११९.८

५७. अथर्व ९.२.११

५८. अथर्व. १९.२.२

५९. यजु. ३.५३; ऋग. १०.५७.३

६०. ऋग. १०.५३.१

६१. अथर्व १४.१.१०

६२. ऋग. १०.११९.९

६३. ऋग. १०.४८.७

६४. अथर्व. ५.६.१०

६५. अथर्व. १९.४.२

६६. अथर्व. १९.४.३

६७. अथर्व. ९.२.७

६८. अथर्व. ९.२.१६

६९. अथर्व. १९.४.४

७०. अथर्व. १.२.२३

७१. अथर्व. ९.२.२४

७२. अथर्व. १९.५.२.५

७३. अथर्व. ९.२.८

७४. अथर्व. ९.२.५

७५. अथर्व. ११.८.१

७६. यजु. २५.२१; ऋग. १.८९.८; साम. १८७४

७७. ऋग. १.८९.१; यजु. २५.१४

७८. यजु. १५.३९

७९. अथर्व. ६.१३१.२

८०. अथर्व. १९-५२.३

८१. अथर्व. १९.५२.४

८२. अथर्व. ७.१२.४

८३. ऋग. ७.१०४.८, अथर्व ८.४.८

८४. अथर्व. ६.१३२.१

८५. ७.४३.१

८६. अथर्व. ७.५२.२

८७. ऋग. ८.१८.१५

८८. ऋग. १०.१७७.१

८९. ऋग. ९.२.१९

९०. अथर्व. १९.४५.१

९१. अथर्व. १९.४५.१

९२. अथर्व. ९.२.२०

९३. अथर्व. १९.५२.१

९४. यजु. ११.६६

९५. अथर्व. ७.५.४

९६. अथर्व. ९.२२

९७. अथर्व. ६.४५.१; अथर्व १६.१ (१).३ अथर्व. ६.१८.३; ऋग. ७.८६.६

परोपकारिणी सभा के आगामी शिविर व कार्यक्रम

०१.	साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर	-	११ से १८ जून-२०२३
०२.	आर्य वीरांगना दल शिविर	-	१९ से २५ जून-२०२३
०३.	दम्पती शिविर	-	२४ से २७ अगस्त-२०२३
०४.	डॉ. धर्मवीर स्मृति दिवस	-	०६ अक्टूबर-२०२३
०५.	साधना-स्वाध्याय-सेवा शिविर	-	२९ अक्टूबर से ०५ नवम्बर-२०२३
०६.	ऋषि मेला	-	१७, १८, १९ नवम्बर-२०२३

कृपया शिविर में भाग लेने के इच्छुक शिविरार्थी पूर्व से ही प्रतिभाग की सूचना दें।

शहीदों की कुर्बानी याद करो

पं. नन्दलाल निर्भय

भारत माँ के पुत्र-पुत्रियों! वक्त न अब बर्बाद करो।
देश भक्त, बलवान, शहीदों की कुर्बानी याद करो।।

राणा-सांगा ने बाबर से, महाघोर संग्राम किया।
खट्टे दांत किए पापी के, जग में ऊँचा नाम किया।।
सोलह सहस्त्र देवियों ने या सचमुच बड़ा कमाल किया।
जौहर व्रत निभाया, भारत माँ का ऊँचा भाल किया।।

कर्णवती की शौर्य गाथा, पढ़करके दिलसाद करो।
देश भक्त, बलवान, शहीदों की कुर्बानी याद करो।।१।।

भारत माँ का पुत्र दुलारा था राणा प्रताप सुनों।
अकबर से टकराया निर्भय, सहन किए संताप सुनो।।
भूखा-प्यासा फिरा वनों में, देश धर्म का दीवाना।
वैरी दल के होश उड़ाए, देश भक्त था सरदाना।।

देश भक्त सब बनो, परस्पर वीरों नहीं फसाद करो।
देश भक्त, बलवान, शहीदों की कुर्बानी याद करो।।२।।

वीर शिवाजी था रणबंका, मुगलों से था टकराया।
औरंगजेब दशचारी का, मुंह मोडा ना दहलाया।।
तेग बहादुर गुरु निराला, धर्म हेतु कुर्बान हुआ।
तेग बहादुर का सुत गोविन्द, भारत माँ की शान हुआ।।

अबला, दीन, अनाथों की, हे वीरो! तुम इमदाद करो।
देश भक्त, बलवान, शहीदों की कुर्बानी याद करो।।३।।

बन्दा बैरागी बलसाली था, आजादी का दीवाना।
यवनों से जुझा था योद्धा, देशभक्त था मर्दाना।।
धर्म की रक्षा में बन्दा ने, हँस कर दी थी कुर्बानी।
हरीसिंह नलुवा ने यवनों को दी, दिला याद नानी।।

बिस्मिल बनकर युद्ध क्षेत्र में, हे वीरो! सिंहनाद करो।
देश भक्त, बलवान, शहीदों की कुर्बानी याद करो।।४।।

मदनलाल ने लंदन में, जाकर के, वैलजली मारा।
फांसी के फन्दे को चूमा, भारत का था सुत प्यारा।।
उधमसिंह था वीर बहादुर, देशभक्त का रणबंका।
लंदन में बन शेर दहाड़ा, नहीं मौत की की रांका।।

वीर सिंहनी लक्ष्मीबाई सी पैदा औलाद करो।
देश भक्त, बलवान, शहीदों की कुर्बानी याद करो।।५।।

तांत्याटोपा, कुंवरसिंह से, देशभक्त बलवान बनो।
राजगुरु, सुखदेव, भगतसिंह बनो, देश की शान बनो।।
भारत माँ की सेवा में, तन-मन-धन भेंट चढ़ा दो तुम।
देश, धर्म हित जीते हैं हम, जग को साफ बता दो तुम।।

नन्दलाल भारत में वीरों की भारी, तादाद करो।
देश भक्त, बलवान, शहीदों की कुर्बानी याद करो।।६।।

आर्य सदन बहीन, जनपद पलवल, हरियाणा
चलभाष-९८१३८४५७७४

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान, अजमेर में कई वर्ष से संचालित आयुर्वैदिक चिकित्सालय का पुन: आरम्भ २६ अगस्त को किया गया है। यह चिकित्सालय सोमवार को छोड़ सप्ताह में ६ दिन मार्च से अक्टूबर सायं ५ से ७ बजे तक व नवंबर से फरवरी सायं ४ से ६ बजे तक दो घण्टे खुलेगा।

इसमें वरिष्ठ आयुर्वेद चिकित्सक की सेवा उपलब्ध है। चिकित्सा परामर्श व चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। यदि आप अपने धन को इस पुण्य कार्य में लगाना चाहते हैं, तो परोपकारिणी सभा के बैंक खाते में सहयोग भेज सकते हैं। सहयोग भेजकर ८८९०३१६९६१ पर सूचित अवश्य कर देवें। **-मन्त्री**

(परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित)

योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर

(स्वामी विष्वङ्जी परिव्राजक के सान्निध्य में)

संवत् २०८०, आषाढ़ कृष्ण अष्टमी से अमावस्या तक, तदनुसार ११ से १८ जून २०२३

इस योग-साधना शिविर में योग सम्बन्धी विषयों का वैदिक-दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक शिविरार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य-सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
३. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
४. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि-उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
५. बाह्य-वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे- समाचार-पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखने आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
६. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
७. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन-सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
८. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।
९. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ- परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) कार्यालय से (०१४५-२९४८६९८, मो. ९३१४३९४४२१) से सम्पर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता-बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्-पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार अतिरिक्त भुगतान से की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं, शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गम्भीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर

देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने-पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क २००० रु. मात्र जमा करना होगा। पृथक् कक्ष का शुल्क २००० रु. अतिरिक्त देय है। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारम्भ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है, क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर **दूरभाष :** ०१४५-२९४८६९८, मो.नं. ९३१४३९४४२१

– : मार्ग : –

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेलवे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

ऋषि उद्यान में आने वाले अतिथियों से निवेदन

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान अजमेर में आने वाले सज्जनों के निवास-भोजन की व्यवस्था की जाती है। यह व्यवस्था ठीक से चल सके, इसके लिए आप अतिथियों के सहयोग की अपेक्षा है। जो भी अतिथि यहाँ कम या अधिक दिन रुकना चाहें तो आने के कम से कम दो दिन पूर्व परोपकारिणी सभा या ऋषि उद्यान के कार्यालय में सूचना देकर स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर लेवें। सूचना में अपना नाम, पता, दूरभाष व साथ में आने वाले व्यक्तियों की संख्या, उनकी अवस्था (आयु), स्त्री या पुरुष सहित बता देवें। शौचालय की सुविधा भारतीय या पाश्चात्त्य अपेक्षित है? आपके यहाँ पहुँचने व प्रस्थान का दिन और समय तथा भोजन ग्रहण करेंगे या नहीं, यह भी स्पष्टता से बता देवें। आधार कार्ड की छाया प्रति साथ लाएं। यह सब लिखकर व्हाट्सएप पर भेज देंगे तो श्रेष्ठ है।

आपकी सूचनाओं के होने पर आपके लिए व्यवस्था समुचित की जा सकेगी। अचानक बिना सूचना के आने पर होने वाली असुविधा व कष्ट से आप बच सकेंगे। साथ ही इससे यहाँ के कार्यकर्त्ताओं को भी अनावश्यक असुविधा से बचाने में सहायता होगी। आशा है आपका समुचित सहयोग मिल सकेगा। **सूचना हेतु सम्पर्क-**

ऋषि उद्यान कार्यालय - ०१४५-२९४८६९८ परोपकारिणी सभा कार्यालय - ०१४५-२४६०१६४
व्हाट्सएप - ८८९०३१६९६१ सम्पर्क का समय - ११ से ४ बजे तक
(किसी एक सम्पर्क पर सूचना देना पर्याप्त रहेगा) निवेदक - मन्त्री

आभूषण

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना माता, पिता, आचार्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चाँदी, माणिक, मोती, मूंगा आदि रत्नादि से युक्त आभूषणों के धारण कराने से मनुष्य का आत्मा सुभूषित कभी नहीं होता क्योंकि आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है।

सत्यार्थ प्रकाश तृतीय समुल्लास

परोपकारिणी सभा अजमेर के नवीन प्रकाशन रियायती मूल्य पर

पुस्तक का नाम	पृ. सं.	वास्तविक मूल्य रुपये	छूट के साथ मूल्य रुपये
ऋग्वेद संहिता	९००	५००	४००
अथर्ववेद संहिता	५५०	४००	३००
ऋग्वेद भाष्य नवम भाग	४००	३००	२२५
पञ्चमहायज्ञ विधि	६२	२०	१५
वैदिक संध्या मीमांसा	१०७	४०	३०
महर्षि दयानन्द सरस्वती का पत्र-व्यवहार (दोनों भाग)	१३९२	८००	५००
महर्षि दयानन्द के हस्तलिखित-पत्र	३३६	२००	१००
कुल्लियाते आर्यमुसाफ़िर (दोनों भाग)	९३८	९५०	६००
डॉ. धर्मवीर का सम्पादकीय संकलन (तीन भाग)	८१४	५००	२५०

यजुर्वेद भाष्य (महर्षि दयानन्द सरस्वती) पृष्ठ संख्या- २१९७, चार भागों का मूल्य = १३००/-
डाक-व्यय सहित विशेष छूट पर उपलब्ध मूल्य = १०००/-

पुस्तकों हेतु सम्पर्क करें:-दूरभाष - 0145-2460120, चलभाष - 7878303382

VEDIC PUSTKALAYA
0510800A0198064
1342679A
0510800A0198064.mab@pnb

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु
खाताधारक का नाम - वैदिक पुस्तकालय, अजमेर
(VEDIC PUSTKALAYA, AJMER)
बैंक का नाम - पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-
0008000100067176
IFSC - PUNB0000800
UPI ID :
0510800A0198064.mab@pnb

विद्या के कोष की रक्षा व वृद्धि राजा व प्रजा करें

वे ही धन्यवादार्ह और कृत-कृत्य हैं कि जो अपने सन्तानों को ब्रह्मचर्य, उत्तम शिक्षा और विद्या से शरीर और आत्मा के पूर्ण बल को बढ़ावें जिससे वे सन्तान मातृ, पितृ, पति, सास, श्वसुर, राजा, प्रजा, पड़ोसी, इष्ट मित्र और सन्तानादि से यथायोग्य धर्म से वर्त्तें। यही कोष अक्षय है, इसको जितना व्यय करे उतना ही बढ़ता जाये, इस कोष की रक्षा और वृद्धि करने वाला विशेष राजा और प्रजा भी है। (सत्यार्थ प्रकाश सम्मुलास ३)

परोपकारी ग्राहकों हेतु आवश्यक सूचना

परोपकारी के अनेक सदस्यों की यह शिकायत रहती है कि उन्हें पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है। रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका भेजने पर डाक व्यय बढ़ जाता है। सदस्यों से निवेदन है कि जो रजिस्टर्ड डाक से पत्रिका मंगवाना चाहते हैं, वह निम्नानुसार डाक व्यय सभा के खाते में अग्रिम रूप से जमा करके कार्यालय को सूचित कर दें। रजिस्टर्ड डाक का व्यय (पत्रिका शुल्क के अतिरिक्त) निम्न प्रकार है-

१. प्रत्येक अंक (वर्ष भर २४ अंक) रजिस्टर्ड डाक से मंगाने पर - डाक व्यय - १०००/-

२. एक मास के दो अंक- एक साथ मंगाने पर वार्षिक - डाक व्यय - ५००/-

३. एक वर्ष के २४ अंक- एक साथ मंगाने पर - डाक व्यय - १००/-

बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

गुरुकुल प्रवेश सूचना

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषिउद्यान, अजमेर में संस्कृत भाषा, पाणिनीय व्याकरण, वैदिक दर्शन, उपनिषदादि के अध्ययन हेतु प्रवेश आरम्भ किये गए हैं। इन्हें पढ़कर वैदिक विद्वान्, उपदेशक, प्रचारक बन सकते हैं। कम से कम दसवीं कक्षा उत्तीर्ण १६ वर्ष से बड़े युवकों को प्रवेश मिल सकता है। प्रवेशार्थी को पहले ३ माह का अस्थाई प्रवेश दिया जाएगा। इस काल में अध्ययन व अनुशासन में सन्तोषजनक स्थिति वाले युवकों को ही स्थाई प्रवेश दिया जाएगा। सम्पूर्ण व्यवस्था निःशुल्क है। गुरुकुल में अध्ययन के काल में किसी भी बाहर की परीक्षा को नहीं दिलवाया जाएगा, न उसकी अनुमति रहेगी। प्रवेश व अधिक जानकारी के लिए-

चलभाष : ७०१४४४७०४० पर सम्पर्क कर सकते हैं। सम्पर्क समय- अपराह्न ३.३० से ४.३०।

शुल्क वृद्धि की सूचना

परोपकारी के पाठकों बडे भारी मन से सूचित करना पड रहा है कि कागज के मूल्य और छपाई के अन्य साधनों के मूल्यों में बेतहाशा वृद्धि के कारण जनवरी 2023 से सदस्यता शुल्क बढाना पड रहा है। बढी हुई दरें इस प्रकार से हैं -

भारत में

एक वर्ष	-	400/-	पांच वर्ष -	1500/-
आजीवन (20 वर्ष) -	6000/-	एक प्रति -	20/-

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते? तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में पञ्चमहायज्ञ अवश्य करणीय कर्म हैं। इन्हीं में से एक है- अतिथि यज्ञ। प्रत्येक गृहस्थ के लिए अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और वह राशि एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल/आश्रम में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय। इस राशि को प्रदान कर सभा के माध्यम से अतिथि यज्ञ सम्पन्न कर सकते हैं।

सभा की योजना के अनुसार प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी होता सदस्यों में अंकित किया जाता है, ऐसे सज्जनों के नाम परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक/सभा के खाते में ऑनलाइन द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। **आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।**

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि, जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे, तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। राशि जमा करने के पश्चात् दूरभाष द्वारा कार्यालय को अवश्य सूचित करें। दूरभाष - 8890316961

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715** **IFSC-SBIN0031588**

email : psabhaa@gmail.com **सूचना देने हेतु चलभाष - 8890316961**

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ अप्रैल २०२३ तक)

१. श्री प्रणव बलदुआ, कोटा २. श्री रामस्वरूप आर्य, अलवर ३. श्री जे.पी. चतरथ, करनाल ४. श्री ओम्प्रकाश देवेश्वर, दिल्ली ५. श्री गौरव मिश्रा, अजमेर ६. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ७. सुश्री अरुणा गौड, अजमेर।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गो-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्चट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(०१ से १५ अप्रैल २०२३ तक)

१. प्रेमलता दुग्गल, सूरत २. श्री राधेश्याम शर्मा, अजमेर ३. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ४. स्वर्णलता मालेवर, अजमेर ५. श्री महावीर, अजमेर ६. श्री गणपत देव सोमानी, राजगढ़ ७. कान्ता जागेटिया, कर्नाटक।

अन्य प्रकल्पों हेतु सहयोग राशि

१. श्री नीलकमल उपाध्याय, नर्मदापुरम २. श्री दुर्गेश कराटे, नर्मदापुरम ३. श्री सुरेश छिन्दवाड़ा ४. श्री संजय व श्री सतीश आर्य, रोहतक ५. श्रीमती अनिता दुबे, नर्मदापुरुम ६. डॉ. सुभाष दुबे, इटारसी ७. श्री हनुमन्त, मनेवाड़ा ८. सुरभि शर्मा, मनेवाड़ा ९. श्री लोकेश, नागपुर १०. गुरुकुल आश्रम, होशंगाबाद ११. श्री संदीप चिनमिया, जमानी १२. श्री रमेश सिंह परिहार, इटारसी १३. श्री धर्मेन्द्र यादव, भोपाल १४. श्री दीपक गुप्ता, इटारसी १५. श्री मनीराम चौहान, रायसेन १६. श्री विष्णुप्रसाद वाबने, खण्डवा १७. श्री ईमानसिंह विश्वकर्मा, नरसिंहपुरु १८. श्री बाबूलाल, खण्डवा १९. स्वामी सत्येन्द्रानन्द, रोजड़ २०. श्री सिद्धसेन शास्त्री, भोपाल २१. श्री अनुप्रसाद त्रिपाठी, छिन्दवाड़ा २२. श्री आनन्द/श्रीमती तुलसी/श्री बालचन्द, नागपुर २३. आचार्य रामप्रसाद विद्यालंकार, हरिद्वार २४. श्रीमती नीलम गोयल/श्री सुशील गोयल, ज्वालापुर २५. श्री अनन्तराम चन्द्रभाई पटेल, दिल्ली २६. आर्यसमाज तलतेज, अहमदाबाद २७. श्री रविकुमार, पुणे २८. श्री अमित जैन, इटारसी २९. श्री अरविन्द मालवीय, इटारसी ३०. आर्यसमाज पश्चिम दिल्ली ३१. श्री देवमुनि, अजमेर ३२. श्री राजेशपाल, इटारसी ३३. श्री संजय मालवीय, नर्मदापुरम ३४. श्री सुनील चौधरी, इटारसी ३५. श्री रामप्रकाश, इटारसी ३६. स्वामी दयानन्द सरस्वती विद्यालय, मालवा ३७. गुड्डा गलार, इटारसी ३८. श्री बाबूलाल पटेल, इटारसी ३९. श्री सुन्दरलाल पटेल, इटारसी ४०. श्री सुन्दरलाल पटेल, इटारसी ४१. डॉ. दशरथ सिंह, इटारसी ४२. श्री गुलाबदास, इटारसी ४३. श्री छगनलाल साहू/ श्रीमती रामाबाई, इटारसी ४४. श्री दिनेश चन्द्रवंशी, इटारसी ४५. श्री केवलसिंह चन्द्रवंशी, सारणी ४६. आर्यसमाज डोलरिया ४७. श्री रविकुमार आर्य, बैतुल ४८. श्री पंकज, गुरुकुल होशंगाबाद ४९. श्री अनूप गायकवाड़, जबलपुर ५०. श्री चलीकराम चौधरी, इटारसी ५१. श्री चन्द्रकान्त आर्य, छिन्दवाड़ा ५२. श्री रामविलास चौधरी, इटारसी ५३. श्री महेश कुमार लीमानिया, नर्मदापुरम।

'सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'महर्षि दयानन्द जीवन-चरित्र' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' ने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अतः परोपकारिणी सभा ने ७ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष **'सत्यार्थप्रकाश'** के साथ **'महर्षि का जीवन-चरित्र'** एवं **'आर्याभिविनय'** पुस्तक का वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है।

एक सैट की छपाई का खर्च लगभग १५० रु. आता है। ५०० **से कम प्रतियों पर स्टिकर लगाकर तथा ५०० या अधिक प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित किया जाएगा।**

१५० रु. प्रति सैट के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	३०००/- रु.
	३० प्रतियाँ	४५००/- रु.
	५० प्रतियाँ	७५००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	१५०००/- रु.
	५०० प्रतियाँ	७५०००/- रु.
	१००० प्रतियाँ	१,५०,०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी राशि दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

सभा प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु बैंक विवरण

खाताधारक का नाम

परोपकारिणी सभा, अजमेर

(PAROPKARINI SABHA AJMER)

बैंक का नाम

भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी चौक, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-

10158172715

IFSC - SBIN0031588

UPI ID : PROPKARNI@SBI

पण्डित गंगाराम वानप्रस्थी

गोदावरी नदी के तट पर, बासर, निजामाबाद, हैदराबाद में पण्डित गंगाराम वानप्रस्थी ने दिनांक 21.08.1933 को विधवा महिलाओं को डूबने से बचाया, इस साहसिक कार्य को करने पर जागीरदार से सम्मान स्वरूप मिला पदक।

आर जे/ए जे/80/2021-2023 तक प्रेषण : १५-१६ मई २०२३ आर.एन.आई. ३९५९/५९

अनन्य ईश्वर भक्त, योगेश्वर

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

की

२०० वीं जयन्ती

के अवसर पर

परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा आयोजित

दिव्य एवं भव्य

अन्तर्राष्ट्रीय ऋषि मेला

१७-२० अक्टूबर २०२४

सादर आमन्त्रण

प्रेषक:

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज,

अजमेर (राजस्थान) ३०५००१

मेवा में,